जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत

हरगौरिविवाह नाटक

डाक्टर श्रीरामदेवका

जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत

हरगौरीविवाह नाटक

डाक्टर श्रीरामदेवझा
एम.ए., पी-एच.डी.
रीडर, मैथिली-विभाग
ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा

मिथिला-रिसर्च-सोसाइटी
लहेरियासराय, दरभंगा

JAGAJJYOTIRMALA KRITA

HARAGAURI VIVAH NATAKA

जगज्ज्योतिमल्ल कृत

हरगौरीविवाह नाटक

सर्वाधिकार : डाक्टर श्रीरामदेवझा

प्रकाशक : नूतन पुस्तक भवन
लालबाग, दरभंगा

संस्करण : प्रथम १९७०
द्वितीय १९८२

मूल्य : छौ टाका मात्र

मुद्रक : कमल प्रिंटिंग प्रेस, नयाटोला, पटना-४

'वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ ॥'

दिवंगतानां (पूज्य कपिलेश्वरझानामधेय) पितृपादानां
पुण्य-स्मृतये
समस्त-श्रद्धा-पुरस्सरम्

पुष्टिं ससृष्टिं विकृतेर्विनष्टिं
नित्यं वितन्वन् स्वयमेक एव ।
स्वभूः स्वयम्भूरपि शम्भुरेव
त्रिदेवरूपो हि पिता प्रणम्यः ॥

यस्य श्रमेण तपसा नित्यकल्याणचिन्तया ।
वर्धितस्तरुरत्रेह फलमर्पयते स्वधा ॥

—श्रद्धानतो रामदेवः

दोसर संस्करण

हरगौरीविवाह नाटक ठीक बारह वर्षक बाद पुनः मुद्रित भऽ रहल अछि। प्राचीन साहित्यक हेतु ई कोनो आश्चर्यजनक नहिं। प्रसन्नता एहि बातक जे एहि मध्य ई नाटक आलोचक-अनुसन्धाताक ध्यान आकृष्ट कयलक। अनेको मान्यताकँ तोड़लक बनौलक। नेपालीय मैथिली साहित्य दिस उन्मुख होयबाक प्रेरणा देलक। पुनर्मुद्रणमे श्रीरमानाथमिश्र 'मिहिर'क सक्रिय सहयोग ओ नूतन पुस्तक भवनक संचालक श्रीभोलाजीक उत्साह धन्यवाद ई छथि।

श्रावणी पूर्णिमा,
१९८२

—रामदेवझा

Scanned by CamScanner

पुरोवचन

'मैथिली शैव साहित्य' विषयपर पी-एच० डी० उपाधिक हेतु शोधप्रबन्ध लिखबाक क्रममे बहुत रास नवीन सामग्रीक उपलब्धि भेल जाहिमे एकटा महत्त्वपूर्ण उपलब्धि वर्त्तमान कृति थिक। अनुसन्धानक क्रममे विभिन्न इतिहास ग्रन्थमे नेपालक मल्लवंशक महाराजाधिराज जगज्ज्योतिर्मल्लक 'हरगौरीविवाह नाटक'क उल्लेख ओ प्रशंसा देखबामे आयल। किन्तु कतहु एकर विस्तृत चर्चा, परिचय वा समीक्षा नहि देल गेल छल। एकर मूल प्रतिक अनुसन्धान करऽ लगलहुँ किन्तु नेपालक कोनो सार्वजनिक वा वैयक्तिक पुस्तकालयमे एकर कोनो प्रतिक अस्तित्वक सूचना नहि भेटि सकल। ओही क्रममे डेनियल राइट महोदयक 'हिस्ट्री ऑफ नेपाल'क परिशिष्ट भागमे हुनका द्वारा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयक पुस्तकालयकेँ प्रदत्त नेपालमे संगृहीत पाण्डुलिपिक सूचीमे एहि नाटकक नाम ओ क्रमांक देखबामे आयल। ओही पाण्डुलिपिक माइक्रोफिल्मक आधार पर प्रस्तुत संस्करण उपस्थित करब संभव भऽ सकल अछि। एहि नाटककेँ सर्वाङ्गपूर्ण बनयबाक प्रयासमे हम कोताही नहि कयल तथापि पूर्ण सावधान रहनहु किछु त्रुटि रहिए गेलैक अछि। मुद्रणक क्रममे प्रेसक प्रमादसँ अथवा छपबाकालमे टाइप टूटि जयबाक कारणे कतोक अशुद्धि भैए गेलैक। आब ओकर संशोधन भविष्यक संस्करणमे संभव अछि।

पोथीकेँ वर्त्तमान रूपमे अनबामे अनेकानेक महानुभावक कृतज्ञताभार हमरा पर छनि। सी० एम० कालेज (दरभंगा)क प्राचार्य डाक्टर श्रीलक्ष्मीकान्तमिश्रजी (सम्प्रति :बिहार-विद्यालय-परीक्षा-समिति, पटना केर अध्यक्ष) एहि पाण्डुलिपिक माइक्रोफिल्म कालेजक पुस्तकालय दिससँ अनयबाक व्यवस्था तथा ओकर उपयोग करबाक अनुमति देबाक सहृदयता देखौलनि। हुनक एहि सौजन्यक प्रति परम अनुगृहीत छियनि। एही संग कैम्ब्रिज-विश्वविद्यालयक पुस्तकालयक प्रति आभारी ओ कृतज्ञ छी जे एहि सम्पत्तिकेँ सुरक्षिते नहि रखने रहल अपितु अध्ययन हेतु एहि पोथीक माइक्रोफिल्म बनाय उपलब्ध करौलक।

एहि नाटकक वाचन, पाठ-निर्धारण ओ प्रकाशनमे आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन', पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' तथा डाक्टर श्रीशैलेन्द्रमोहनझा जाहि रूपमे पथ-प्रदर्शन, प्रेरणा ओ उत्साहवर्द्धन कयलनि तदर्थ ओहि गुरुवर लोकनिक समक्ष कृतज्ञताज्ञापन ओ आभारप्रदर्शन धृष्टता मात्र होयत। अंगरेजी विभागक प्रोफेसर श्रीशंकरानन्दपालित, मैथिली विभागक प्रोफेसर श्रीनवीनचन्द्रमिश्र, डाक्टर श्रीकाञ्चीनाथझा'किरण', मिथिला-मिहिरक सम्पादक श्रीसुधांशुशेखरचौधरी आदि विद्वान् अपन महत्त्वपूर्ण योगदान ओ हार्दिक समर्थन प्रदान कऽ हमरा सबल बनौलनि। सहयोगी प्रोफेसर श्रीलक्ष्मीकान्तझाजीक सहयोग आदिसँ अन्तधरि बनल रहल अछि। ओ अपन कतोक ऐतिहासिक सामग्री देबामे कनेको संकोच नहि कयलनि। हुनक देल अनेकशः सामग्रीक उपयोग हम एहि नाटकक सम्पादनमे कयल अछि। हिनका लोकनिक हम हृदयसँ कृतज्ञ छियनि।

सी० एम० कालेजक पुस्तकालयक अध्यक्ष श्री विन्ध्यनाथमिश्र, श्रीदिवाकान्त मिश्र तथा श्रीअविनाशझा एहि नाटकक अध्ययन-अनुशीलनमे अत्यन्त रुचि देखौलनि तथा पुस्तकालय दिससँ जतबा साधन ओ सुविधा अपेक्षित छल से सुलभ कऽ देलनि। राज स्टूडियो (लहेरियासराय)क कार्यकर्त्ता श्रीशिवशंकरझाजी बड़ परिश्रमसँ फोटोस्टैट कापी तैयार कयलनि। नवभारत प्रेस (लहेरियासराय)क स्वत्वाधिकारी श्री निर्भयराघव मिश्रजी तथा हुनक प्रेसक कर्मचारी लोकनि एकर मुद्रणमे व्यक्तिगत अभिरुचि लेलनि। ई लोकनि अत्यन्त धन्यवादार्ह थिकाह।

मैथिलीक सामान्य पाठक ओ अनुसन्धित्सु गण जगज्ज्योतिर्म्मल्लकृत हरगौरीविवाह नाटक देखि कनेको हृष्ट होयताह एवं एकरा उपयोगी बुझताह तँ हम अपन परिश्रम सार्थक बूझब।

कबिलपुर
लहेरियासराय, दरभंगा
श्रावणीपूर्णिमा, १९७०

श्रीरामदेवझा

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल कृत

हरगौरी विवाह नाटक

अनुक्रमणिका

गीत-सूची

क्रमशः गीतक प्रथम पंक्ति, कवि ओ पृष्ठसंख्या

प्रस्तावना

मल्लराजवंश

नेपालक मध्यकालीन इतिहास मल्लराजवंशक गौरवगाथासँ भरल अछि। एहि वंशक शासन कालमे नेपालमे साहित्य, संगीत, शिल्प आदिक अभूतपूर्व उन्नति भेल। कलाक कोनो क्षेत्र एहन नहि छल जकर विकाम एहि कालमे नहि भेल। कलाभिव्यक्तिक चरमोत्कर्ष एहि कालमे देखल जाइछ। नेपालमे मल्लवंशक सुव्यवस्थित इतिहास तेरहम शताब्दीक आरम्भिक भागसँ आरम्भ भेल आ अठारहम शताब्दीक तेसर चरणमे आबि गोरखा राजा पृथ्वीनारायण शाह द्वारा नेपाल-विजयक संग समाप्त भऽ गेल।

मल्ल उपाधिकारी सर्वप्रथम राजा अरिमल्ल देव तेरहम शताब्दीक आरम्भमे नेपालक शासन करैत छलाह। राइट महोदयक कथ्य जे अरिदेव अपने मल्ल उपाधि नहि लेने छलाह। ओ जखन मल्ल-क्रियामे लागल छलाह ताही कालमे पुत्रजन्मक सूचना भेटलनि। तेँ ओकर उपाधि मल्ल दऽ देलथिन।[1] किन्तु ने०सं० ३२२ (१२०१ ई०) मे लिखल 'सत्वबाधा प्रशमनम्' नामक ग्रन्थमे 'अरिमल्ल देवस्य विजयराज्ये'क उल्लेख अछि।[2] अत: अरिदेवेसँ मल्ल उपाधिक प्रचलन माननीय अछि। किन्तु नेपालीय मल्लवंशक क्रमबद्ध इतिहास स्थितिमल्लसँ आरम्भ होइत अछि। हुनकासँ पूर्वक मल्लवंशक

---

१. डी० राइट, हिस्ट्री ऑफ नेपाल, पृ० ९७

२. ढुण्ढिराज भण्डारी, नेपाल को ऐतिहासिक विवेचना, पृ० ७८

इतिहास अत्यन्त अव्यवस्थित रूपमे भेटैछ। बीच बीचमे अन्यो शासक सभक अस्तित्व देखबामे अबैछ। मिथिलाक कर्णाट वंशीय नान्यदेव ओ तद्वंशीय अन्य राजाक संग हरसिंहदेवक सेहो उल्लेख नेपालक इतिहासमे देखबामे अबैत अछि।

चौदहम शताब्दीक अन्तिम चरणमे नेपालक राजनीतिक धरातल पर जयस्थितिमल्लक आविर्भाव भेल। स्थितिमल्लक विवाह रुद्रमल्लक दौहित्री राजल्लदेवीक संग भेलनि। राजल्ल देवी रुद्रमल्लक उत्तराधिकारिणी नायक देवीक पुत्री छलीह। अतः राजल्लदेवीक पाणिग्रहणक संगहि स्थितिमल्ल नेपालक राजनीतिक क्षितिजक महत्त्वपूर्ण नक्षत्र बनि गेलाह। राजल्ल देवी कर्णाटबंशीय राजा हरसिंहदेवक वंशजा कहल जाइत छथि तेँ स्थितिमल्लक वंशज गण अपनाकेँ गौरवपूर्वक सूर्यवंशी कर्णाट वंशोद्भव कहैत देखल जाइत छथि।

स्थितिमल्ल नेपालक धार्मिक, सामाजिक क्षेत्रमे अनेकशः सुधार कयलनि। अपितु ई कहब समीचीन होयत जे हुनकहि द्वारा संघटित ओ प्रचालित समाज-व्यवस्था औखन धरि नेपालमे विद्यमान अछि। स्थितिमल्लक मृत्यु ने० सं० ५१५ (१३९५ ई०) मे भेलनि। स्थितिमल्लक पौत्र यक्षमल्ल (ज० १४०८ ई०—मृ० १४८१ ई०) क पश्चात् नेपाल राज्य हुनक पुत्र सभमे विभक्त भऽ गेल। एहिमे ज्येष्ठ पुत्र रायमल्ल (१४८२-१५०५ ई०) भक्तपुर (भात गाँव) क राजा भेलथिन तथा दोसर पुत्र रत्नमल्ल (१४८२-१५२० ई०) कान्तिपुर (काठमाण्डू) क शाखा-राज्य स्थापित कयलनि। रत्नमल्लक अतिवृद्धप्रपौत्र हरिहरसिंहमल्लक ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मीनरसिंहमल्ल (१६२०-४१ ई०) तँ कान्तिपुरक राजा भेलथिन किन्तु कनिष्ठ पुत्र (१६२०-६१ ई०) ललितपुर वा पाटनक राज्य स्थापित कयलथिन।

भक्तपुर, कान्तिपुर ओ ललितपुर—मल्लवंशक तीन स्वतन्त्र शाखाक अधीन स्वतन्त्र राज्यक रूपमे अठारहम शताब्दीक तेसर चरणमे गोरखा राजा पृथ्वीनारायणशाहक आक्रमणक पूर्वधरि विद्यमान रहल।

नेपाल ओ मिथिलाक सम्पर्क

मल्लराजवंशक मिथिलाक कर्णाट वंशक संग रक्तक सम्बन्ध रहबाक कारणे नेपालमे मिथिला, मैथिल एवं मिथिलाभाषाक प्रति आदर भाव स्वाभाविक रूपें विद्यमान छल। मिथिलासँ विद्वान्, पण्डित, कवि, संगीतज्ञ एव अन्य शास्त्र ओ विषयक ज्ञाता लोकनिकें आमन्त्रित कऽ ओ लोकनि अपन-अपन राजसभामे सम्मान पूर्वक स्थान दैत छलाह। नेपालक समाज-व्यवस्थाक निर्माणमे मिथिलाक धर्मशास्त्री लोकनिक महत्त्वपूर्ण योगदान रहलनि अछि। गृह, भूमि, जाति, मृतक संस्कार आदिक सम्बन्धमे नियम बनयबाक लेल स्थितिमल्ल मिथिलाक रघुनाथझा आ रमानाथझाक सहयोग लेने छलाह।

मैथिल लोकनिकें नेपालमे बसबाक लेल भूमि, सम्पत्ति, ओ राजकार्यमे उच्च पद सभ देल जाइत छलनि। ओ मैथिल लोकनि नेपालक अर्थव्यवस्था, राजव्यवस्था, समाजव्यवस्था धर्माचार ओ साहित्य-सगीतकें खूब नीक जकाँ प्रभावित कयलनि। नेपालोमे मैथिल सम्प्रदायक ग्रन्थ, मैथिली-लिपि, मैथिली भाषा ओ मैथिली साहित्यक पूर्ण प्रचार भेल। नेपालक मल्लराजसभामे संस्कृत, नेवारी ओ मैथिली तीनूकें समान आदर ओ महत्ता प्रदान कयल गेल। मिथिलाक साहित्य ओ संगीतसँ मल्लराजवंशीय नेपाल-उपत्यका जेना गुंजायमान भऽ उठल छल। मैथिलीक कोमलकान्त पदावलीक गान मात्र नहि होइत छल अपितु गीत ओ नाटकक रूपमे मैथिलीक अजस्र साहित्यक सर्जना कमसँ कम दू सय वर्ष धरि अनवरत रूपमे होइत रहल। ओहि अन्तरालमे नेपालमे मैथिली सभ्य, संस्कृत ओ सम्भ्रान्त जनसमुदायक भाषाक रूपमे प्रतिष्ठित छल। मैथिलीभाषाक ज्ञान ओ मैथिलीमे काव्य-सर्जनक क्षमता विकसित ओ परिमार्जित रुचिक मानदण्ड बनि गेल छल।

मल्लकालक भाषा ओ वाङ्मयक समीक्षा करैत इतिहासकार बालचन्दशर्मा उचिते कहलनि अछि जे--

'मल्लराजाहरूले गर्वसाथ आफ्नो सम्बन्ध तराई बाट कर्नाट वंश सित देखाए का छन । जयस्थितिमल्लको सामाजिक व्यवस्थामा पनि तेह्रौंते पण्डित-हरू को हात थियो । माथि उल्लेख गरिएका अधिकांश मौलिक रचनामा कर्नाट दरबारसित सम्बन्धित तेह्रौंते पणिडतहरू को प्रत्यक्ष वा परोक्ष प्रभाव परेको छ। उक्त संस्कृत रचनाहरू को अतिरिक्त तिरहुत को देशी वाङ्मयर भाषा एवं लिपि को प्रभाव पनि मल्ल कालीन वाङ्मयमा देखिन्छ। नेवारी र तेह्रौंते लिपिका प्रारम्भिक रूपमा कुनै विशेष अन्तर छैन । मल्ल शासन का समाप्ति पछि पनि तेह्रौंते वाङ्मय को प्रभाव नेपाली वाङ्मय उपर निकै समय सम्म कायम नै रह्यो ।'[1]

नेपालीय मैथिली साहित्य

वस्तुत: मैथिलीक आदिकालीन साहित्यक महत्वपूर्ण भागजँ नेपालमे संरक्षित रहल तँ मध्यकालीन साहित्यक एक विशाल भागक रचना नेपालेमे भेलआ ओहि साहित्य-रचनाक समस्त श्रेय मल्लवंशीय शासक-सामन्त लोकनि केँ छनि । नेपालक मल्लराजागण स्वयं तँ गीत, काव्य ओ नाटकादिक रचना करितहि छलाह संगहि अपना आश्रयमे अनेकानेक कवि-नाटक-कारकेँ राखि गीत-नाटकादिक रचना करबैत छलाह । एहि प्रकारक सामग्रीसभ नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू, भातगाँव, ललितपुर आदिक बुद्धिजीवी एवं संग्रहालय ओ पुस्तकालय सभमे छिड़ियायल अछि ।

मल्लराजवंशक कालमे नेपालमे दुइ प्रकारक मैथिली साहित्यक रचना भेल। ओ दुहू प्रकार थीक गीतावली ओ नाटक । मल्लराजालोकनि संगीत-शास्त्र ओ काव्य-रचनामे स्वयं अभिरुचि रखैत छलाह । हुनका लोकनिक रचल अनेकश: संगीत ग्रन्थ सभ उपलब्ध अछि। संगीत ग्रन्थ जकाँ ओ लोकनि रागतालबद्ध ओ तन्निर्देश पूर्वक गीत ओ पदक रचना अपनहुँ करैत छलाह एवं गुणी व्यक्तिकेँ तदर्थ प्रेरित करैत छलथिन । ओ गीत सभ

---

१. बालचन्द्र शर्मा, नेपाल को ऐतिहासिक रूपरेखा, पृ०, १९४

विविध विषय, भाव ओ रससँ सम्पुटित रहैत छल । गीत सभमे शृंगार, भक्ति ओ शान्त रसक प्राधान्य रहैत छल । एही प्रकारेँ नाटकोक रचना प्रचुर परिमाणमे भेल । विश्वमल्लसँ आरम्भ कऽ रणजितमल्ल ओ जयप्रकाशमल्ल धरि तीनू शाखा-राज्यमे जे कोनो राजा भेलाह से सभ कीतँ अपनहि नाटथ-रचना करैत छलाह वा हुनका आश्रयमे नाटय-रचना कयल जाइत छल । एहि नाटक सभमे संगीत ओ गीतक प्राचुर्य रहैत छल । संगहि, एहि नाटक सभमे वार्त्तालापक मैथिली गद्यक सेहो पुष्कल प्रयोग दृष्टिगोचर होइत अछि । नाटककार लोकनि अपन नाटकक हेतु विषय-वस्तुक चयन पुराण, इतिहास, लौकिक कथा आदिसँ कऽ शृंगार, वीररस ओ भक्तिभाव युक्त विविध प्रकारक नाटक-रचना करैत छलाह ।

नेपालक ई समस्त सामग्री एखन धरि अन्धकारमे पड़ल अछि । १८९१ ई० म जर्मनीसँ अगस्टस कोनरेडी महोदय 'हरिश्चन्द्र नृत्यम्' प्रकाशित करौने छलाह ![1] पश्चात्, एकर सभक किछु परिचय म० म० हरप्रसादशास्त्री,[2] डा० पी० सी० बागची,[3] डा० जयकान्त मिश्र[4] आदि विद्वान लोकनि प्रस्तुत कयलनि । बंगीय साहित्य-परिषद्सँ ननीगोपाल वन्दोपाध्यायक सम्पादनमे विद्याविलाप, माधवानल कामकन्दला, महाभारत ओ रामायण नामक चारि गोट नाटक 'नेपाले बाङ्ला नाटक' शीर्षकसँ प्रकाशित भेल छल ।[5] एमहर

१, डा० जयकान्त मिश्र, हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, भाग—१, पृ. २८२

२. हरप्रसाद शास्त्री, कैटेलग आफ दि पाम लीफ एण्ड सेलेक्टेड पेपर मैन्युस्क्रिप्ट्स बिलौंगिंग टू दि दरबार लाइब्रेरी, नेपाल. भाग २ (कलकत्ता, १९०५ तथा १९१६)

३. डा० पी०सी० बागची, नेपाले भाषा नाटक, बंगीय साहित्य-पत्रिका परिषद्-भाग —३६, बंगाब्द—१३३६

४. हिस्ट्री आफ मैथिली लिटलेचर, भाग—२, पृ. २४१-२४९, २५३-२८६

५. ननीगोपाल बन्दोपाध्याय, नेपाले बाङला नाटक, बंगीय साहित्यपरिषद् २४३।१ अपर सर्कुलर रोड, कलकत्ता, १३२४ बंगाब्द ।

आबि कऽ मैथिलीक विद्वान् लोकनिक ध्यान नेपालक एहि भण्डार दिस विशेष रूपें गेल अछि।

डा० जयमन्तमिश्र नेपालक शिलालेख सभमे प्रयुक्त मैथिली गीत दिस सर्व प्रथम ध्यान आकृष्ट कयने छलाह।[1] डा० शैलेन्द्रमोहनझा चतुरचतुर्भुज ओ सिद्धिनरसिंहमल्लक गीतप्रकाशमे अनलनि अछि।[2] प्रोफेसर लक्ष्मीकान्तझाक तँ अनुसन्धानक विषये छनि मल्लराजवंशक मैथिलीक विकासमे योगदान। ओ 'नानाराग गीतम्' सँ विद्यापतिक अप्रकाशित प्रन्द्रह गोट गीतक संगहि २२ गोट अज्ञात मैथिली कविक नामावली सेहो प्रकाशमे अनलनि अछि।[3] वर्त्तमानो लेखक कतोक सामग्री प्रकाशमे अनलनि अछि।[4]

जगज्ज्योतिर्मल्ल

भक्तपुरक मल्लराजागणमे जगज्ज्योतिर्मल्ल एकटा महत्त्वपूर्ण राजा भेलाह। हिनक शासन काल डी० आर० रेग्मीक अनुसार १६१३ ई० सँ १६३७ ई० धरि रहल।[5] हिनका समयमे नेपालमे पूर्वोत्तर भारतसँ भदइ ओ उड़ीद अन्न आनल गेल छल। किन्तु स्थानीय जनता सभ अमंगलक आशंकासँ

---

१. मिथिला-मिहिर (पटना), ३ सितम्बर १९६७

२. डा० शैलेन्द्रमोहन झा, चतुर चतुर्भुज एवं गीत सप्तदशी, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय, १९६९; कविसिद्धिनरसिंहमल्ल, पुस्तककेन्द्र, दरभंगा, १९६९

३. विदेह, सी० एम० कालेज (दरभंगा) पत्रिका, १९६९-७०

४. उपरिवत्, : मिथिला-मिहिर, १७ नवम्बर १९६८; मिथिला-भारती (पटना) अंक—१, भाग—३-४; कुंज विहार नाटक, मनीषा, दरभंगा, १९७६; दशावतार नृत्यम्, मैथिली प्रकाश कलकत्ता, १९७६, शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत, विराट नगर (नेपाल)।

५. डी० आर रेग्मी, मेडाइवल नेपाल, पार्ट—२, फर्मा के०एल० मुखोपाध्याय, कलकत्ता—१९६६, पृ २१५

एहि अन्नक प्रचारक विरोध कयलक। फलस्वरूप राजा एहि अन्नक प्रचार रोकि देलनि। एकरा उपलक्ष्यमे देव पूजा ओ ब्राह्मणभोजन आदि कराओल गेल।[1]

जगज्ज्योतिर्मल्ल तुलजा भवानीक परम भक्त छलाह। प्रवाद अछि जे हुनक भक्तिसँ प्रभावित भऽ कऽ देवी स्वयं स्त्रीक रूप धऽ कऽ राजाक सङ चौपड़ि खेलाइत छलीह। स्त्रीक यथार्थ देवीस्वरूपसँ अनभिज्ञ रहबाक कारणे हुनकर मोनमे एक दिन कुविचार उत्पन्न भऽ गेलनि। देवी तैखन विलीन भऽ गेलथिन आ पुनः कहियो प्रत्यक्ष नहि भेलथिन।[2]

एकटा और एहने अद्भुत घटनाक उल्लेख वंशावली सभमे भेटैत अछि। जगज्ज्योतिर्मल्लक एक बेर धारणा भऽ गेलनि जे भातगाँवक भैरवक मोनमे कोनो देवीक प्रति अनुचित भावना उत्पन्न भऽ गेलनि अछि। भैरवकेँ दण्ड देबाक लेल ओ एक दिन कालीक रथक संग भैरवक रथकेँ भयानक रूपसँ ठोकर लगबा देलथिन।[3]

ई भातगाँव ओ ठिमि नामक गाममे मेष संक्रान्ति दिन आदि भैरवक रथयात्रा उत्सव मनयबाक प्रथा चलौलनि।[४] ने० सं० ७५०, शाके १५५२मे एक पुष्करिणीक निर्माण करौलनि जे पूसमे आरम्भ भेल तथा बैसाखमे सम्पन्न भेल।[५] ई पोखरि औखन भातगाँब लग सैनिक छावनीक आगाँमे विद्यमान अछि। नमहर पोखरि होयबाक कारणे 'तवपोखरी' नामसँ प्रसिद्ध अछि।

पर्सिवल लन्दनक अनुसार जगज्ज्योतिर्मल्लक समकालमे इसाइ पादरी ग्राबर नेपाल बाटे यात्रा कयने छल। लन्दन महाशयक अनुसार जगज्ज्योति-

---

१. डी० राइट, पृ० ११५

२. उपरिवत्

३. उपरिवत्

४. उपरिवत्

५. मेडाइवल नेपाल, पार्ट—२, पृ० २१६

मल्ल काठमाण्डू पर बराबरि आक्रमण करैत रहैत छलाह जाहिसँ जनतामे हुनका बिरुद्ध विशेष असन्तोष छल।[1] किन्तु एहि आक्रमणक कथाक समर्थन नेपालक अन्य कोनो स्रोतसँ नहि भऽ पबैत अछि।

जगज्ज्योतिर्मल्लक जीवनकाल राजनीतिक क्रिया-कलापक दृष्टिञो ओतेक क्रियाशील नहि छल जतेक विद्या-व्यवसाय ओ कला-साधनाक क्षेत्रमे। नेपालक प्राचीन वंशावलीमे ओ विभिन्न इतिहासकार द्वारा हुनक विद्या-साहित्य-संगीत कला-प्रियताक मुक्त कण्ठसँ प्रशंसा कयल गेल अछि।

ओ एक भावुक कवि, कलाकार ओ पण्डित राजा छलाह। अपन परवर्त्ती राजा लोकनिक हेतु एक आदर्श स्थापित कऽ गेलाह जकरा हुनक वंशज लोकनि खूब पुष्ट, विकसित एवं संबलित कयलथिन। ओ साहित्य-संगीत-कला-विदग्ध राजा छलाह। गीत, नाटक, संगीत, छन्दः शास्त्र, संगीत शास्त्र, नाट्यशास्त्र, ज्योतिष, कामशास्त्र, वैद्यक आदि विषयमे अत्यन्त पाटव प्राप्त छलनि। एकर प्रमाण अछि तत्तत् विषयमे हुनक रचल ओ विशेषज्ञ सभ द्वारा रचाओल गेल अनेकशः कृति सभ। कीर्त्तिलताक प्रतिलिपि हुनकहि द्वारा कराओल गेल छल जकरा म. म. हरप्रसादशास्त्री प्रकाशित कराओल।

जगज्ज्योतिर्मल्लक कृति सभमे सङ्गीत-विषयक ग्रन्थ सभ विशेष अछि। म० म० हरप्रसाद शास्त्री हुनक सङ्गीतसंग्रह, सङ्गीतचन्द्र, सङ्गीतसारसंग्रह आदिक उल्लेख कयने छथि।[2] एहिमे नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयक सूचीमे संगीत-भास्करकेँ संगीत-चन्द्रटीका[3] नामसँ तथा संगीत-सार-संग्रहकेँ संगीत-

१. पर्सिवल लन्दन, नेपाल, भाग—१, लन्दन, १९२८, पृ० ५६

२. कैटलग ऑफ दि पाम लीफ एण्ड सेलेक्टेड पेपर मैन्युस्किप्ट्स बिलौंगिंक टू दि दरबार लाइब्रेरी, नेपाल, भाग—१, प्रीफेस-XLI एवं पृ० २६०-६४

३. राष्ट्रीयअभिलेखालय, सूची—२।२२२

चिन्तामणिक[1] नामसँ उल्लेख कयल गेल अछि। संगीतसारार्णव[2] ओ संगीत-सारसंग्रह व्याख्यानम् [3]नामक दुइ गोट और ग्रन्थक उल्लेख कयल जाइछ।

श्लोकसार संग्रह अथवा स्तोत्रसार संग्रह नामसँ सेहो एकटा ग्रन्थक उल्लेख भेटैत अछि ।[4] पद्म श्रीज्ञानक 'नागरसर्वस्व'[5] नामक कामशास्त्रीय ग्रन्थक टीकाक निर्माण कयने छलाह। तहिना हुनक 'अश्ववैद्यकम्'[6] पर टीका कयल भेटैत अछि।

एहि कार्यमे हुनक सभसँ पैघ सहयोगी छलथिन वंशमणि उपाध्याय। वंशमणिक सहयोगसँ ओ अनेको कृतिक रचना कयने छलाह। ओ जगज्ज्योतिर्मल्लकेँ मिथिलासँ 'नरपतिजयचर्यास्वरोदय' नामक प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ आनि देने छलथिन जाहि पर राजा स्वयं टीका कयने छलाह तथा ओहि टीकाक प्रतिलिपि मिथिलाक्षरमे लक्ष्मण संवत् ४९४, शाके १५३९मे वंशमणिए कयने छलाह।[7] संगीतभास्कर नामक जाहि ग्रन्थक चर्चा जगज्ज्योतिर्मल्लक

---

१. तत्रैव, सूची—१।३३६, ३०७, १४७८

२. तत्रैव, सूची—३।२६०

३. मेडाइवल नेपाल, पार्ट—२, पृ० २१६

४. सूर्यविक्रम ज्ञवाली, नेपाल उपत्यका को मध्यकालीन इतिहास, पृ० ९७, २०९

५. मेडाइवल नेपाल, पार्ट—२, पृ० ८३७

६. राष्ट्रीय अभिलेखालय सूची—१।३४१

७. तत्रैव, सूची—१।११८६; धनवज्र वज्राचार्य, इतिहास-संशोधन—प्रमाण-प्रमेय, पहिलोभाग, जगदम्बा प्रकाशन, ललितपुर, नेपाल, पृ०१४१

""महाराजाधिराज श्रीश्रीमज्जगज्ज्योतिर्म्मल्ल विरचिता श्रीस्वरोदय दीपिका समाप्ता ।""शाके १५३९ लसं ४९४ ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्द्दशी शनौ श्री जगज्ज्योतिर्म्मल्ल निदेशमासाद्य श्रीवंशमणि शर्मा व्यलेखीदिदं पुस्तकम् ।

कृति कहि कऽ कयल जाइछ से वस्तुत: वंशमणिएक कृति थिकनि जकर स्पष्ट उल्लेख ग्रन्थकार द्वारा कयल गेल अछि ।[1]

जगज्ज्योतिर्मल्लक मैथिली कृति

किन्तु मैथिली साहित्यमे जगज्ज्योतिर्मल्ल अविस्मरणीय छथि गीत ओ नाटक लऽ कऽ। विद्यापति ओ गोविन्ददासक अतिरिक्त आदि काल ओ मध्य-कालमे एतेक गीतक रचना कयनिहार प्राय: क्यौ कवि एखन धरि प्रकाशमे नहि अयलाह अछि । मल्लराजवंशक भक्तपुर शाखामे सभसँ प्राचीन गीतावली जगज्ज्योतिर्मल्लेक उपलब्ध भेल अछि। हुनक गीत सभक अनेको स्वतन्त्र संग्रहक पता लागल अछि जे काठमाण्डूक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे रक्षित अछि। एहिमे विशेष उल्लेखनीय अछि—**दशावतार नृत्यम्** (सूची १/३३८, ७९२), **गीतपञ्चाशिका** (सूची १/३९९,४६१), **नानारागगीत संग्रह** (सूची १/३३८, सूची १/८६७), **गीत संग्रह** (सूची १/४६१) आदि। डा० जयकान्त मिश्र द्वारा अन्विष्ट **भाषागीत संग्रह**[2]; **रागभजन संग्रह** (सूची १/३७९) एवं अन्य अनेको गीत-संग्रह सभमे जगज्ज्योतिर्मल्लक बहु संख्यक गीत सभ संकलित छनि। किन्तु ओकरा सभक व्यवस्थित रूपसँ अध्ययन औखन धरि नहि भऽ सकल अछि।

जगज्ज्योतिर्मल्लक मैथिली नाटक

जगज्ज्योतिर्मल्लक तीन गोट नाटक प्रसिद्ध छनि—**कुंज बिहार नाटक**[3],

---

१. नेपाल उपत्यका को मध्यकालीन इतिहास, पृ० ९७
श्रीमज्जगज्ज्योति अधीश्वरस्य निदेशमासाद्य गुणोत्तरस्य
सङ्गीतशास्त्रस्य चकार टीका श्रीमैथिलो बङ्ग (वंश) मणि मनीषाम् ...
....नेपालाब्दे शशि शर मुनि व्यञ्जिते शुक्लपक्षे।
....सङ्गीताख्यं समलिखदसौ भास्करे विज्ञ इन्दुः ॥

२. हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, भाग—१, पृ० २४६

३. राष्ट्रीय अभिलेखालय सूची—१।४६१ अछि।

मुदितकुवलयाश्वनाटक[1] तथा हरगौरीविवाह नाटक[2]। एहिमे पहिल नाटक पी० सी० बागची महोदय १३४७ बंगाब्दमे 'परिचय' नामक बंगलामासिक पत्रिकामे प्रकाशित करौने छलाह।[3] मुदितकुवलयाश्व नाटक केर कतिपय विद्वान अध्ययनो कयलनि अछि तथापि ओ नाटक एवं ओकर अध्ययनक परिणाम प्रकाशमे नहि आबि सकल अछि।[4] एहि नाटकक कर्त्तृत्वक सम्बन्धमे सन्देह करबाक पर्याप्त सामग्री अछि। नाटकक प्रस्तावनामे नगर-वर्णना-गीत तँ वंशमणिक रचित अछिहे—नटी-सूत्रधार सेहो कहैत अछि—

"परन्तु ई महाराजाधिराज काव्यगान्धर्वकलानीतिशास्त्र निपुन अतिविदग्ध कओने अभिनय अनुरक्त होएताह ॥

क्षणं विचिन्त्य ॥

प्रिये स्मरण भेल, मैथिल भारद्वाज गोत्र कवि पण्डित श्रीरामचन्द्रशर्म पुत्र श्रीवंशमणि उझाञो कएल जे, मोञो कहि अएलाहु तन्हिहि कुवलयाश्व-मदालसा चरित्र नाम नाटक से नाचह ॥"[5]

दोसर दिस अन्तमे कहल गेल अछि जे

मार्कण्डेय पुराणान्तर्गतमेतन्मदालसोपाख्यायानं दृष्ट्वा भाषा गीतैर्नाटयं रचितं विचित्र रसभावयुतं श्रीमता श्रीजगज्ज्योतिर्मल्लभूपति-सूरिणा।[6]

---

१. तत्रैव, सूची—११४६१

२. कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय पुस्तकालय, पाण्डुलिपि संख्या—१६९५

३. 'मनीषा' का० द० सस्कृत विश्वविद्यालय पत्रिका, १९७६ मे पुनः प्रकाशित।

४. वर्धवान विश्वविद्यालय सँ इहो नाटक प्रकाशित भेल अछि।

५. झवाली द्वारा उद्धृत, पृ० २३०

६. वृहत् सूची पत्रम्, भाग—३, वीर पुस्तकालय, काठमाण्डू, पृ० ५०

एहि नाटकक रचनाकालक उल्लेखक प्रसंगमे सेहो जगज्ज्योतिर्मल्ल द्वारा रचित होयबाक उल्लेख अछि—

खशरहर मुखेन्दु १५५० व्यञ्जिते शाक वर्षे
स्मरतिथि बुध मैत्रेष्वर्जुने ज्येष्ठ पक्षे।
बुधवर कृत सङ्गैः श्रीजगज्योतरीशै-
र्मुदित कुवलयाश्व नाटकं चारुचक्रे ॥[1]

तेसर नाटक थिकनि 'हरगौरीविवाह नाटक'। ई सर्वथा अनधीत नाटक अछि। विभिन्न विद्वान् लोकनि एकर चर्चामात्र करैत रहलाह अछि अथवा पुष्पिका-वाक्य मात्रकें यत्र-तत्र उद्धृत करैत रहलाह अछि। ओकर प्रकाशन वा आद्यन्त अध्ययन एखन धरि संभव नहि भऽ सकल छल।

दुइ गोट नाट्यकृति 'भाषा सङ्गीतम्' वा 'षोडश गीतम्' तथा 'दण्ड-पाणि उतपत्ति नाच' औरो भेटल अछि। पहिलमे मैथिली गद्यक प्रयोग भेल अछि मुदा दोसरमे केवल गीते अछि।

जगज्ज्योतिर्मलक भक्तिभावना

जगज्ज्योतिर्मल्लक रचनामे शृंगार, शान्त ओ भक्ति-भावना मुख्य स्थान ग्रहण कयने अछि। हुनक भक्ति-भाव कोन देवताक हेतु छलनि, एकर ज्ञान हुनक कोनो रचनासँ सरलतासँ भेटि जा सकैछ। नेपालमे रचित मैथिली साहित्यमे शृंगार रसक नायक-नायिकाक वर्णन, मान-विरह, अभिसार-मिलन रूप-सौन्दर्य आदिक वर्णन सामान्य रूपसँ भेटितहि अछि। किन्तु दोसर दिस भक्ति-भावपूर्ण गीत सभक सेहो प्राचुर्य अछि। नेपालक मध्यकालीन साहित्य, संगीत, कला-कौशल, चित्रकारी, मूर्त्ति, मन्दिर, भवन आदिक सामान्यो पर्यवेक्षणसँ ई धारना दृढ़ होइत अछि जे नेपालक मध्यकालीन समाजे नहि, मल्लराजालोकनि स्वयं बहु देव-देवीक पूजक-उपासक छलाह। अतः साहित्योमे

1. उपरिबत्।

उपास्य देव-देवीक प्रति श्रद्धान्वित गीत-नाटकादिक रचना होइत रहल। एहिमे शिव, विष्णु, राम, कृष्ण, सूर्य, गणेश, दुर्गा, भवानी, भगवतीक विविध रूप, विष्णुक विभिन्न अवतार, बुद्ध, तारा, भैरव, महाकाल आदिकें आलम्बन बनाओल गेल। जगज्ज्योतिर्मल्लोक नाटक एवं गीतक पर्य्यालोचन कयने एहि बातक पुष्टि होइछ। हुनक गीत-संग्रह सभमे शिव, भवानी, गणेश, गंगा, सरस्वती, सूर्य, राम, कृष्ण, दशावतार आदिक वन्दना कयल गेल अछि।

बहु देव-देवीमे जगज्ज्योतिर्मल्लक सर्वाधिक भक्ति-भाव भव-भवानीक प्रति देखल जाइछ। एक शिलालेखमे ओ अपना हेतु कहने छथि—

श्रीश्रीश्री पशुपतिचरणकमलधूरिधूसरित शिरोरुह

श्रीमन्मानेश्वरीष्टदेवतालब्धवरप्रसाद......[1]

हरगौरीविवाह नाटकक प्रस्तावनामे सेहो स्पष्ट कहल गेल अछि—

श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्ल महाराज शिवभक्तिपरायण तह्निका शिवाश्रित

जे कथा तथीहि उल्लास......[2]

हुनक भक्ति विषयक यावन्तो गीतमे शिव-गीतेक बाहुल्य देखना जाइछ। दोसर दिस भगवती वन्दनाक सेहो अनेकशः गीत सभ भेटैत अछि। ऊपर दुइ गोट किंवदन्तीक उल्लेख कयल गेल अछि जे भगवती सामान्य स्त्रीक रूपमे हुनका संग चौपड़ि खेलाइत छलथिन तथा कोनो भगवतीक प्रति अनुचित भावना रखबाक सन्देहमे भातगाँवक भैरवकें ओ दण्ड देने छलथिन।

---

१. मेडाइवल नेपाल, पार्ट—४, शिलालेख संख्या—३८, पृ ६०

२. हरगौरीविवाह नाटक, यथार्थ पृष्ठ संख्या—२, एक्सपोजर—१क

वस्तुत: शृंगारोत्मक अधिकांश गीतक अन्तमे शिव अथवा भगवतीक कीर्त्तन कयल गेल अछि। अत: निष्कर्ष बहार होइत अछि जे जगज्ज्योतिर्मल्ल शिवक भक्त छलाह। शक्तिक अभावमे जेँ शिवो शववत् रहैत छथि तेँ ओ शिव शक्तिक सम्मिलन एवं सामरस्यक प्रतीक स्वरूप हरगौरीविवाह नाटकक रचना कयलनि।

जगज्ज्योतिर्मल्ल नाटक, गीत, संगीत आदिकेँ सामान्य मनोरंजनक वस्तु नहि मानि आराध्यक सान्निध्य-प्राप्तिक साधन मानैत छथि। आ हुनक आराध्य छथिन देवाधिदेव शिव। शक्ति संयुत शिव। साम्बसदाशिव। ओही साम्बसदाशिवक प्रति भक्ति भावना अर्पण करबाक हेतु ओ हरगौरीविवाह नाटकक रचना कयने छलाह।

हरगौरीविवाह नाटक

ई नाटक मैथिली साहित्यक अनमोल कृति थिक। मैथिलीक नाट्य-साहित्यमे ई एकटा अद्भुत प्रयोग थिक। मध्यकालीन मैथिली गद्यक विशिष्ट स्वरूपक दर्शन एहिमे होइत अछि। जगज्ज्योतिर्मल्ल एहि नाटकमे अन्य कविक गीतक समावेश कऽ इतिहासक एकटा अध्यायकेँ सुरक्षित राखि देलनि। एहि कृतिक साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, भाषा-वैज्ञानिक महत्त्वक मूल्यांकन एकर प्रकाशनक बाद संभव भऽ सकत।

हरगौरी विवाह नाटकक पाण्डुलिपिक परिचय

हरगौरीविवाह नाटकक एकमात्र पाण्डुलिपि इंगलैंडक कैम्ब्रिज विश्व-विद्यालयक पुस्तकालयमे सुरक्षित अछि।[१] उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे

१. कैम्ब्रिजविश्वविद्यालय-पुस्तकालय, अतिरिक्त पाण्डुलिपि संख्या १६९५

'हिस्ट्री ऑफ नेपाल'क रचयिता डी० राइट महोदय नेपालसँ प्राप्त कऽ बहुत रास अन्य पाण्डुलिपिक संग एहू नाटकक पाण्डुलिपि उक्त विश्वविद्यालयकेँ प्रदान कऽदेलथिन्ह।[1]

ओहि पाण्डुलिपिक माइक्रोफिल्मक आधार पर ओकर परिचय प्रस्तुत करब संभव भऽ सकल अछि। माइक्रोफिल्म मे २४ गोट एक्सपोजर छैक। ओकरा इनलार्ज कऽ कऽ देखला पर अनुमान होइछ जे कागतकेँ आयताकार बनाय ओकरा बीचसँ (जोड़ा पोस्टकार्ड जकाँ) मोड़ि ब्रह्मपत्र बनाओल गेल अछि तथा बीचक दुनू पृष्ठ पर लिखल गेल अछि। प्रत्येक एक्सपोजरमे दुइ पृष्ठक चित्र अछि। अत कुल पृष्ठ २४ × २ = ४८ गोट अछि। प्रति पृष्ठमे सात गोट मुख्य पंक्ति साधारणतः अछि। प्रति पंक्तिमे साधारणतः ३५ गोट अक्षर अछि। पंक्तिक बीच-बीचमे प्रतिलिपि कालमे प्रमादवश छूटि गेल अंशकेँ पत्रक ऊपर अथवा नीचाँक सादा भाग पर अंकित कऽ देल गेल अछि। मुख्य पंक्तिमे जाहि ठामक अंश छूटल छैक ताहि ठाम विशेष प्रकारक 'छूट' चिह्न(ˇ) (,) (ˇ)बनाओल अछि। पत्रक ऊर्ध्व वा अधोभागमे छुटलाहा अंश लीखि ओकरा आगाँमे ओहि पंक्तिक संख्या दऽ देल गेल छैक जकर ओ अंश थिकैक। यदि ई अंश पत्रोपरि भागमे छैक तँ ऊपरसँ पंक्तिक क्रम-संख्या गनल गेल छैक आ नीचाँमे रहने नीचाँसँ क्रम-संख्या गनल गेल छैक। ई छूटल अंश अक्षर, शब्द, वाक्य आ अनेक ठाम अनेक व्यक्तिक कथोपकथन, दीर्घ-दीर्घ वाक्य, सौंसे गीत पर्यन्त छैक। साधारणतः मुख्य पंक्तिमे जाहि ठामक छूटल अंश छैक ठीक ताहि सोझे पत्रक ऊपर व नीचाँ भागमे ओ अंशो लिखि देल गेल छैक। यदि छूटल अंश बेसी नमहर छैक तँ तकरा अनेक पंक्तिमे लिखल गेल छैक। ताहू पर

---

१. डी० राइट, हिस्ट्री ऑफ नेपाल, पृ० २०७

नहि अँटने पत्रक दहिन भागमे सेहो पंक्ति मोड़ि कऽ लिखल गेल छैक। यदि छूटल अंश बेसी नमहर भेलैक आ लिपिकारक अनुमान भेलैक जे कोनहु प्रकारेँ पत्रक सादा भागमे नहि अँटि सकत तँ ओकरा हेतु लिपिकार स्वतन्त्र पत्रक उपयोग कयलक अछि।

पत्र सभ पर कतहु पत्रक वा पृष्ठक संख्या नहि देल छैक। संभव अछि जे पत्रक बाहरबला सादा भाग पर पत्र-संख्या देल होइक। किन्तु जाहि क्रममे वर्त्तमानमे पत्रक्रम लागल छैक अथवा जाहि क्रमसँ फोटो कयल गेल छैक से अत्यन्त गज-पट लगैत अछि। आगाँवला अंश पाछाँ लागल छैक, पाछाँ वला अंश आगाँ। किछु पत्र-युग्म बीचसँ फाटि कऽ फराक भऽ गेल छैक तेँ प्रायः अनेक ठाम पत्रक अदला-बदली भऽ गेल छैक। हम सर्वप्रथम एक्सपोजरक दुनू पत्र वा पृष्ठकेँ क्रमशः क एवं ख कहलिऐक अछि। तत्पश्चात् प्रत्येक पत्र वा पृष्ठकेँ पूर्वापर क्रमसँ सजयबाक प्रयास कयलिऐक। से कयने सम्पूर्ण नाटकक रूप प्राप्त भऽ जाइत अछि। पुनः निश्चित कयल गेल क्रमकेँ हम यथार्थ पृष्ठ संख्या देलिऐक अछि। एहि रूपमे ४३ गोट पत्र वा पृष्ठक क्रम मीलि जाइत अछि। शेष पाँच गोट पत्र वा पृष्ठ बचैत अछि। ई वैह पत्र सभ थिक जाहिमे प्रतिलिपि कालमे मुख्य भागमे छूटल दीर्घ अंशकेँ लीखल गेल अछि। एहि पत्र सभमे प्रायः सम्पूर्ण गीत अथवा गीतांश सभ अछि। ओ पत्र सभ अछि क्रमशः १क, ११ख, १२क-ख तथा २४ख। एहिमे १क **यथार्थ पृष्ठसंख्या** — २१ (२३क) मेअन्तर्भुक्त कयल जयबाक चाही। १२क केर पहिल पाँच पंक्ति **यथार्थ पृष्ठसंख्या**—२२ (२३ख)मे, २४ख **यथार्थ पृष्ठसंख्या**—२३ (२४क) मे, १२क केर अन्तिम दुइ पंक्ति तथा १२ख केर समस्त पंक्ति **यथार्थ पृष्ठसंख्या**—३० (४ख)मे एवं ११ख **यथार्थ पृष्ठसंख्या**—३७ (८क)मे अन्तर्भुक्त होएबाक चाही। निम्नलिखित सारिणीसँ ई क्रम स्पष्ट भऽ जायत—

पृष्ठक यथार्थ क्रमसंख्या	माइक्रोफिल्मक एक्सपोजरक क्रमसंख्या	पृष्ठक यथार्थ क्रमसंख्या	माइक्रोफिल्मक एक्सपोजरक क्रमसंख्या
१	१३क	२३	२४क (२४ ख अन्तर्भुक्त)
२	१३ख	२४	१ख
३	१४क	२५	२क
४	१४ख	२६	२ख
५	१५क	२७	३क
६	१५ख	२८	३ख
७	१६क	२९	४क
८	१६ख	३०	४ख (१२कसँ शेष दू पंक्ति ओ १२ख सँ समग्रपंक्ति अन्तर्भुक्त)
९	१७क	३१	५क
१०	१७ख	३२	५ख
११	१८क	३३	६क
१२	१८ख	३४	६ख
१३	१९क	३५	७क
१४	१९ख	३६	७ख
१५	२०क	३७	८क (११ख अन्तर्भुक्त)
१६	२०ख	३८	८ख
१७	२१क	३९	९क
१८	२१ख	४०	९ख
१९	२२क	४१	१०क
२०	२२ख	४२	१०ख
२१	२३क (१कअन्तर्भुक्त)	४३	११क
२२	२३ख (१२क सँ पहिल पाँच पंक्ति अन्तर्भुक्त)		

————

एहि हस्तलिखित ग्रन्थक लिपि नेवारी थिकैक। अक्षर सुन्दर ओ सुस्पष्ट छैक। नेवारी लिपि वस्तुतः देवनागरी प्रभावित मिथिलाक्षर थिक। नेवार जाति द्वारा विशेष रूपसँ प्रयुक्त होइत रहलाक कारणेँ एकरा नेवारी लिपि नाम देल गेलैक। एकर कतोक अक्षर तथा किछु मात्रा लगयबाक प्रणाली मिथिलाक्षर ओ देवनागरी दुहूसँ भिन्न छैक। प्रस्तुत ग्रन्थक प्रतिलिपिकार सुलेखक छल, मैथिलीक ज्ञाता छल से अवश्य किन्तु ओ मैथिल नहि छल। आदर्श प्रतिलिपि कऽ ओकर पुनर्वाचन कयल गेल अछि। ओहि मे जे अंश छूटल बूझि पड़लैक तकरा पत्रक ऊपर वा नीचाँ वला भागमे लीखि देल गेल। जे ओतऽ अटबा योग्य नहि छलैक तकरा लेल स्वतन्त्र पत्रक उपयोग कयल गेल। ईहो संभव अछि जे रचयिताकेँ बादमे ओ गीत सभ फुरल होनि आ ओसभ स्वतन्त्र पत्रमे लिखबा कऽ यथास्थान सन्निविष्ट करबाक हेतु राखल गेल हो। जँ ई तर्क स्वीकार कयल जाय तँ इहो मानल जा सकैछ जे रचयिता स्वयं अथवा लिपिकार द्वारा हरगौरीविवाह नाटकक रफ (Rough) कापी तैयार कऽ पूर्ण ओ स्वच्छ प्रति उतारल गेल हो वा उतारबाक हेतु राखल गेल हो।

हरगौरीविवाह नाटकक उपर्युक्त हस्तलिखित प्रतिमे आरम्भक अंश खण्डित अछि। पहिल ब्रह्मपत्र (दुइ गोट पृष्ठ) विच्छिन्न भऽ गेल अछि। फलस्वरूप आरम्भक नान्दी श्लोक, मङ्गलगीत तथा नटी-सूत्रधारक गद्यमय वार्त्तालापक कियदंश नहि भेटैत अछि। जगज्ज्योतिर्मल्लक प्रशंसाश्लोक सेहो छल जकर अन्तिम चरण '........नं जगति कर्णा इवावतीर्णः'सँ वर्त्तमान प्रति आरम्भ भेल अछि।

रचना काल

प्रस्तुत हस्तलेखक अन्तमे नेवारी भाषाक पुष्पिका-वाक्यमे नाटकक रचना काल देल अछि-'**संवत् ७४९ ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्या सूर्य्यग्रासस श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्म्मल्लदेव प्रभुठाकुर सन तुलादानस थ्व हरगौरीविवाह प्याखन दयका जुरो।**'

एकर तात्पर्य भेल जे नेपाल संवत् ७४९ मे ज्येष्ठ कृष्ण आमावास्या दिन सूर्यग्रहणक अवसर पर तुलादान महोत्सवक उपलक्ष्यमे हरगौरीविवाह नाटकक रचना भेल छल ।

नाटकान्तेमे वंशमणिक कारण-गीत उद्धृत अछि जाहिमे उपर्युक्त पुष्पिका-वाक्यक सूचना सभ दैत तुलादान महोत्सवक वर्णन कयल गेल अछि । ओहिमे संवत्क सूचना निम्नरूपक देल अछि—

सात उपर शत सातहि गुनू, समत नेपाल एहि विधि जानू ।।

एहिसँ अंक प्राप्त होयत—

सात उपरशत (१०७) × सातहि गुनू (७) = ७४९

यैह गीत रागभजन संग्रहमे सेहो भेटैत अछि । किन्तु ओतऽ संवत् वला अंश निम्नरूपें कहल गेल अछि—

सात सात बसु जुगलक पाव समत नेपाल द्विजवरहि मिलाव ।।[1]

सात × सात (७ × ७) = ४९

बसु (८) जुगल (२) क ÷ पाव (४) = २८ ÷ ४ = ७

'अकानाम् वामा गतिः' केर अनुसार ७४९ होयत ।

नेपाल संवत् ओ इसवी सनमे ८८० वर्षक अन्तर रहैत अछि, तदनुसार ७४९ सवत् + ८८० = १६२९ इसवी होयत । ओहि वर्षक गणनासँ पता लगैत अछि जे २१ जूनकें सूर्य ग्रहण पड़ल छल । अतः हरगौरीविवाह नाटकक रचना २१ जून १६२९ इसवीकें सम्पन्न भेल छल ।

रचयिता

एहि नाटकक रचयिता जगज्ज्योतिर्मल्ल छलाह जकर सूचना प्रस्तावनामे सूत्रधार दैत छथि । अन्तिम पुष्पिका-वाक्यमे सेहो सैह कहल गेल अछि । नाटकोमे सतरहटा पूर्ण गीतमे 'नृप जगजोति' भणिता अछि । किन्तु आरम्भक 'नगर वर्णना' गीतमे तथा अन्तक 'कारण कथन, गीतमे वंशमणिक भणिता

---

१. रागभजन संग्रह, गीत—३९

अछि। एहिसँ 'हरगौरीविवाहक कर्तृत्व पर सन्देह उत्पन्न भऽ जाइछ। किन्तु जेँ लऽ कऽ एहि नाटकमे वंशमणिक अतिरिक्त अन्यो अनेक कविक गीत सभ प्रसंगत: समाविष्ट अछि तेँ सर्वथा ई कहि देब जे ई जगज्ज्योतिर्मल्लक रचल नहि थिकनि से सम्भव नहि अछि।

लगैत अछि जेना जगज्ज्योतिर्मल्ल एकटा प्रयोग कएने छलाह। विभिन्न स्वतन्त्र गीत — विशेष कऽ शिव-विषयक गीत सभकेँ एक क्रमसँ सजा कऽ हरगौरीविवाहक नाट्य-कथा-सूत्रमे बान्हि देलनि। तेँ रचयिता अपन गीतक संगहि अन्यो कविक प्रसंगोपयुक्त गीत सभकेँ लऽ कऽ गुम्फित कऽ देलनि। तेँ एकरा गीति-नाट्य मानल जाइत अछि। सूर्यविक्रम ज्ञवाली एकरा जँ यूरोपक ओपेराक संग तुलित कयलनि तँ से असंगत नहि।[1]

गीत-संख्या

नाटकक पुष्पिका-वाक्यमे कहल गेल अछि—

'इति श्रीमहाराजाधिराज श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्म्मल्लकृतं पंचपंचाशद-गीतोपद्ध हरगौरीविवाह नाम नाटकं समाप्त।'

अर्थात् नाटकमे कुल ५५ गोट गीतक समावेश कयल गेल छल। सम्प्रति छोट-पैघ सभ मिला कऽ ४९ टासँ अधिक गीत उपलब्ध नहि अछि। अत: कमसँ कम छौ गोट गीत अनुपलब्ध अछि। चारि स्थल एहन अछि जाहि ठाम गीतक प्रथम चरणक सूचक अंशमात्र दऽ कऽ छोड़ि देल गेल अछि, यथा—

१. वासूक्ति गीतं

खाए सिखल हम ॥ (यथार्थ पृष्ठसंख्या-७,एक्स०-१६क)

२. अभिसारिणि ह ॥ (यथार्थ पृष्ठसंख्या—३७,एक्स०-८क)

३ कि कनकलता अरविन्दा ॥ (यथार्थ पृष्ठसंख्या-३०, एक्स० ४ख मे अन्तर्भुक्त एक्स० १२क-खमे देल संकेत)

४. गगन गगन (यथार्थ पृष्ठसंख्या-४२,एक्स०-१०ख)

---

१. नेपाल उपत्यका को मध्यकालीन इतिहास, पृ० २३०।

एहिमे पहिल दू गीतक सम्बन्धमे आन कोनो स्रोतसँ कोनो सूचना नहि भेटैत अछि। तेसर गीत यथार्थ पृष्ठ संख्या-३० एक्स०-४खमे अन्तर्भुक्त अंशमे अबैत अछि। एक्स०-४ख पर पत्रक ऊपरमे छूटल अंशमे देल अछि— 'महा. हे प्रिये सुनह ॥ आसारी ॥ चो ॥ ओहे दिन दिन होअ खीन ॥' एक्स०-१२क पर पाँच पंक्तिमे एक गीत सम्पन्न कऽ छठम पंक्तिसँ 'आसावरी ॥ चो ॥' दऽ 'ओहे दिने दिने होअ खिने'सँ एकटा गीत आरम्भ होइछ। गीतमे महादेव द्वारा पार्वतीक रूपक वर्णन भेल अछि। किन्तु एहू ठाम गीतारम्भसँ पहिने छूट चिह्न दऽ कऽ नीचाँमे एक चरण देल अछि 'कि कनकलता अरविन्दा'। उपरिचर्चित गीतक भावक संग एहि पंक्तिक संगति नहि बैसैत अछि। संभव अछि जे ई कोनो स्वतन्त्र गीतक संकेत हो जकरा पुनः कोनो अन्य स्वतन्त्र पत्रमे लिखल गेल हो किन्तु ओ पत्र हेरा गेल हो। रागतरंगिणीमे कवि रतनाक्षीक एकटा गीत 'भोगिनी आसावरी' रागमे अछि जकर आरम्भ 'कनकलता अरविन्दा' सँ होइछ। ओहू गीतमे नायिकाक रूपक विलक्षण वर्णन अछि।[1] ओ गीत वर्त्तमान प्रसंगमे पूर्ण संगत अछि। अतः ओ गीत यथास्थान उद्धृत अछि।

चारिम गीत एहि नाटकक अन्तमे, कुराग-गान-प्रायश्चित्तार्थ भैरवी रागमे हरिहर-स्वरूप वर्णनात्मक कहल गेल अछि। जकर संकेत 'गगन गगन' सँ देल गेल अछि। नानाराग ओ रागभजन-संग्रह नामक पाण्डुलिपिमे भैरवीए रागमे गेय वशमणिक भणिता-युक्त हरिहर-स्वरूप-वर्णनक एकटा गीत भेटैत अछि जकर आरम्भ 'गगन गगन सम' सँ होइत अछि।[2] अतः 'हरगौरी विवाह' नाटकमे 'गगन गगन' सँ संकेतित गीत यैह थिक। ई गीत यथास्थान उद्धृत अछि।

नेपालीय मैथिली नाटकक आरम्भमे नान्दी-मंगल-गीत रहबाक परिपाटी अछि। एहू नाटकमे नान्दी गीत रहले होयत। अतः नान्दी-गीत— १, नाटकमे

१. रागतरंगिणी, राजप्रेस, दरभगा, पृ० ७६-७७
२. रागभजनसंग्रह, गीत—१०

प्राप्त गीत—४९, प्रथम चरणसँ संकेतित गीत—४, सभ मिला कऽ ५४, गोट गीत होइत अछि। शेष एकटा गीतक सम्बन्धमे अनुमान करऽ पड़त।

नाटकक आरम्भिक भागमे हिमालय, मेना ओ पार्वती मंच पर आबि अपन-अपन विशेषताक व्याख्यान करैत छथि। ओही ठाम हिमालय, पार्वतीक उक्ति पर मेनाकेँ कहैत छथिन—

हे प्रिये ज्योहाक शील ज्योहन थी (क), परन्तु कज्योन कज्योनओ गौरीक चरित्र देखि परम आनन्द होईछ ॥

मेना उत्तर दैत छथिन—

हे नाथ बालचरित अद्भुत ॥

गौरीक एहि अद्भुत बाल-चरित्रक कोनो वर्णन एहि स्थल पर नहि अछि। गौरीक एहि अद्भुत बाल-चरित्रक वर्णन-विषयक गीत 'गीत-संग्रह' नामक पाण्डुलिपिमे भेटैत अछि जे निम्न रूपक अछि—

॥ गोपी वल्लभ ॥ चौ ॥

बाल चरित्र विचित्र अनूप , भाव सहित पूज शिवक सरूप ।
मलयज पंकज वारिज फूल , आक धुथुर जत शिव अनुकूल ॥
कत उपचारे करए शिव पूजा , केवल तत्तिका देव न दूजा ।
शिव शिरिजल हुनि सुन्दर माटि , कोने बुझावल ई परिपाटि ॥
तुलय पदारथ ओ पए दाता , शंकर स्वामि जगदम्बा माता ।
भगतिहि भाव भाव होअ लीन , नृप जगजोति बुझल समिचीन ॥[1]

एकटा और प्रसंग अबैत अछि। विवाहादिक पश्चात् ऋषीश्वरक संग महादेव हिमालयक परिसरमे पहुँचैत छथि। ओतऽ महादेव वाग्वती नदीकेँ अपन हास्यसँ बहिर्भूत भेल कहि हिमालय पर्व्वत, नेपाल मण्डल, पशुपति स्थान, गुह्येश्वरी पीठ आदिकेँ पृथ्वीक सार कहैत छथि। एहि प्रसंगक

१. गीत संग्रह, गीत—१९

वाराह पुराणक वचन सेहो उद्धृत अछि। ठीक एही भावक निम्नरूपक गीत 'गीत संग्रह' मे प्राप्त होइत अछि—

॥ बेलारी ॥ प्र ॥

हास समद्गत वागमती ˎ पार अचारे देवि पशुपती ॥
चौसाठे पीठहि गरुअ नेपाल ˎ ततए विराजह तोहहि कृपाल ॥
देअ नरपति पद पशुपति देव ˎ एहन सरूप जग के नहि सेव।
देवी देव रहए ठामे ठामे ˎ ओका पूजा सेहे पुर कामे ॥
माया पास तरास निवारि ˎ जत अभिमत पुर तोहहि पुरारि ॥
गुपुत रूप रह हे जगदम्बे ˎ नृप जगजोतिमल तुअ अवलम्बे ॥[1]

उपरिचर्चित दुहू गीतमेसँ कोनो एकटा अथवा दूनू गीत हरगौरीविवाह नाटकक हेतु लिखल गेल छल। हमर तँ विश्वास अछि जे दूनू गीत ओही नाटकक थिक। किन्तु तखन गीत संख्या ५६ भऽ जायत। एकर समाधानक सूत्र 'गीत पंचाशिका'मे भेटैत अछि। ओहिठाम मंगल गीत सहित ५१ गोट गीत अछि, यद्यपि गीत होयबाक चाही ५० गोट। ओहि ठाम मंगलगीतक गणना नहि कयल गेल अछि। गीतक क्रमांको मंगलगीतक पश्चात् केर गीतसँ अछि। अत: हरगौरीविवाह नाटकमे सेहो नान्दी-गीतक अतरिक्त पंचपंचाशद् गीत रहल होयत। ईहो अनुमान कऽ सकैत छी जे नाटकारम्भ नान्दी-गीतसँ नहि भऽ संस्कृतक नान्दीश्लोकसँ भेल हो।

नाटकमे भणितायुक्त पूर्ण गीत ३८ गोट अछि जाहिमे १७ गोट गीतमे जगज्ज्योतिर्मल्लक भणिता अछि। शेष गीत अन्य कविक भणितायुक्त अछि। अपूर्ण ओ भणिताहीन गीतमे एकटा गीत कथोपकथनक अछि। दुइ गोट प्रवेश-गीत अछि आ आठ गोट पात्रक निस्सारगीत अछि। एहि अपूर्ण गीत सभकेँ अपूर्ण एहि हेतु कहल जा सकैछ जे एहिमे भणिता नहि अछि। अपूर्ण गीतक स्थानमे जँ लघु गीत कहल जाय तँ अधिक उपयुक्त होयत।

---

१. तत्रैव, गीत—८

राग-निर्देश

नाटकमे प्रत्येक गीतमे राग-तालक निर्देश देल अछि। सभटा मिला कऽ २४ गोट राग-रागिणीक उल्लेख अछि। नाटकमे प्रयुक्त रागरागिणीक गीत-परिमाण निम्नरूपक अछि—

मालव—११, आसावरी—६, धनाश्री—५, पहडिया—३, केदारा—२, कोराव–२, वरारी (ली)–२, सिन्दुरा—२ तथा कानरा, कामोद, कौशि(क), गुण्ड, गोपीवल्लभ, गौडामालव, देशाख, नाट, मल्लारी, मारुधनाश्री, मेघमल्लाल, राजविजय, कहरा, सारङ्ग, सोरठि, सोहै रागमे एक-एक गीत अछि। अन्तिमसँ पूर्वक गीतमात्रमे रागनिर्देश नहि अछि। संभव अछि जे पूर्वक गीतक राग एकरहु राग हो। एतऽ प्रथम पंक्तिसँ संकेतित गीतक रागक गणना नहि कयल अछि।

अन्य कविक गीत

हरगौरीविवाह नाटकमे **विद्यापतिक** ७टा, **विष्णुपुरीक** ३टा **सुकवि सदानन्दक** २टा तथा **गोविन्द, करणमहेश, कृष्णराए, कवि रतन, चतुर चतुरभुज, जगदीश ओ शशिशेखरसिंहक** एक-एकटा गीत उद्धृत अछि। **वंशमणिक** दुइ गोट पूर्ण गीत उद्धृत अछि। अर्थात् ११टा कविक २१टा गीत समाविष्ट कयल गेल अछि। प्रथम पंक्तिसँ संकेतिक गीतमे एकटा **रतनाञ्गी** (वा रतन)क सभावित अछि आ दोसर गीत **वंशमणिक** थिकनि। एहिमे **विद्यापतिक** तीन गोट गीत, **चतुर्भुजक** गीत तथा **कवि रतनक** गीत अन्यो स्रोतसँ प्रकाशमे आयल अछि। तथापि अत्र उद्धृत गीत पाठ-अनुसन्धानक हेतु महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करैछ। **विद्यपतिक** चारि गोट गीत तथा शेष कविक समस्त गीत सर्वथा अज्ञात छल। **करण महेश, कृष्णराए, जगदीश ओ शशिशेखरसिंह** तँ सर्वथा अज्ञात कवि थिकाह। '**जगदीश**' जगज्ज्योतिर्मल्लेक नाम (जगत् + ईश) छल वा कोनो स्वतन्त्र कविक नाम से निश्चय नहि होइछ।

जगज्ज्योतिर्मल्लक पुत्र छलथिन नरेशमल्ल। कोनो दोसरो पुत्र छलथिन तकर सूचना कोनो स्रोतसँ नहि भेटैछ किन्तु एहि ठाम शशिशेखरसिंहकेँ 'श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्ल महाराजनन्दन शशिशेखरसिंह, कहल गेल अछि। नेपालक मल्लराजवंशक इतिहासक हेतु ई एकटा महत्त्वपूर्ण किन्तु एखन धरिक अज्ञात तथ्य थिक।

कहबाक आवश्यकता नहि जे अन्य कविक उद्धृत गीत सभ मैथिली साहित्यक इतिहासमे केहन महत्त्वपूर्ण अध्याय जोड़ऽ जा रहल अछि। जाहि विष्णुपुरीकेँ एखन धरि वैष्णव परमहंस बूझल जाइत छल आ जनिक दुइ गोट गीत मात्र उपलब्ध छल तनिक अत्रप्राप्त तीन गोट शिवविषयक गीत हुनक एक नवे रूप प्रकट कयलक अछि। एहिना अन्यो कविक सम्बन्धमे बोद्धव्य थिक।

अन्यस्रोतक गीत

एहि नाटकक कतोक गीत अन्यो अप्रकाशित गीत संग्रह सभमे पाओल जाइछ। यथास्थान ओहि स्रोत ओ पाठान्तरक उल्लेख कऽ देल गेल अछि।

नाटकक स्वरूप ओ कथावस्तु

समस्त नाटक अंकमे विभाजित नहि कयल गेल अछि, ने नेपाली रंगमंचक परम्परानुसार ओकरा 'दिवसाङ्क'मे बाँटल गेल अछि। ई नाटक नौ खंडमे विभक्त कयल गेल अछि। प्रत्येक खंडकेँ **'सम्बन्ध'** नाम देल गेलैक अछि। नाटककेँ 'सम्बन्ध' मे विभक्त करबाक कोनो दोसर उदाहरण नहि भेटल अछि।

हरगौरीविवाहक कथावस्तुमे पौराणिकताक कोनो आधार नहि लेल गेल अछि। शिव-पार्वतीक विवाहक कथा जाहि रूपमे प्रचलित अछि तकरे नाट्य-बद्ध कयल गेल अछि। विवाहसँ पूर्वक सतीक प्राणत्याग पार्वती-तपस्या, मदन-दहन, ब्रह्मचारी द्वारा पार्बतीक परीक्षा आदिक कोनो चर्च नहि अछि। अत्यन्त सरल ओ संक्षिप्त कथावस्तु लेल गेल अछि।

प्रथम सम्बन्धमे नाटकक प्रस्तावना अछि। सूत्रधार ओ नटी आबि जगज्ज्योतिर्मल्लक कीर्त्तिगान, नगर-वर्णन, नाट्याभिनयक अवसर तथा नाटकक अभिनयक प्रस्ताव करैछ।

द्वितीय सम्बन्धमे नन्दी-भृङ्गीक संग महादेव प्रवेश करैत छथि। प्रवेशक सूचना 'कृष्णराए'क गीत द्वारा देल जाइछ। महादेव अपन स्वभावक वर्णन एकटा श्लोकमे करैत छथि। नन्दी-भृङ्गी तकर समर्थन करैत छथिन। ओ महादेवक धवलिमा ओ धवलता-प्रियताक वर्णन गीत द्वारा करैत छथि। ततः पर महादेव सतीक देह-त्याग ओ तज्जन्य वियोग-व्याकुलता कहि हिमालयक गृहमे गौरी-रूपमे अवतरित सतीकेँ देखऽ जयबाक प्रस्ताव करैत छथि। नन्दी भृङ्गी तकर अनुमोदन करैत छथिन।

तेसर सम्बन्धमे तीनू गोटे हिमालयक सन्निधानमे जाय ऋष्याश्रममे किछु क्षण विश्राम करैत छथि। ऋषीश्वर तावत अपन शिष्य वासुक संग पुष्प-चयन कऽ कऽ अबैत छथि। पुष्प-चयनमे भेल शुभ शकुनसँ कोनो अपूर्व दर्शन होयबाक अनुमान करैत छथि। आश्रममे अबिते महादेव पर दृष्टि जाइत छनि। ओ हुनका दशाङ्ग प्रणाम कऽ गीत द्वारा स्तुति करैत छथिन। महादेव नन्दी-भृङ्गीकेँ ओतहि रहबाक आदेश दऽ स्वयं हिमालयक परिसरमे गौरीकेँ देखऽ विदा होइत छथि। ऋषिक आदेशसँ नन्दी-भृङ्गी विश्राम करैत छथि।

चारिम सम्बन्धमे हिमालय, मेना ओ गौरी प्रवेश करैत छथि जकर सूचना प्रवेश गीत द्वारा भेटैछ। तीनू गोटा एक-एक श्लोकमे अपन-अपन परिचय दैत छथि। हिमालय ओ मेना गौरीक अद्भुत बाल-चरित्र देखि चकित ओ मुग्ध रहैत छथि। एमहर, योगिवेशसँ क्यौ परिचित नहि अछि तेँ ओहि वेशमे क्यौ चीन्हत नहि, से विचारि योगिवेशमे मेना लग जाय महादेव पूछैत छथिन—'हे माता ओहाक कन्या कहिनि छथि'। मेना एहि पर विद्यापतिक गीत द्वारा योगीक आचरणक वर्णन हिमालयसँ करैत छथिन। फेर सदानन्दक गीत द्वारा गौरीकेँ देखि योगीक विचित्र आचरणक वर्णन कऽ योगीसँ कारण-जिज्ञासा करैत भीख दैत छथिन। महादेव ऋषिकेँ हिमालयक

ओतऽ पठयबाक विचारसँ भीख अस्वीकार कऽ चल अबैत छथि। मेना हिमालयकें बड़ आश्चर्य होइत छनि। फेर गौरीक विवाहक सम्बन्धमे चिन्तन करैत प्रस्थान करैत छथि।

पाँचम सम्बन्धमे ऋषीश्वर महादेवक पुनः दर्शनक इच्छासँ नन्दी-भृङ्गीसँ जिज्ञासा करैत छथिन। तावत् गौरीक रूप-दर्शनसँ मुग्ध महादेव अबैत छथि। हिमालयसँ अपना हेतु कन्यायाचना करबा लय ऋषीश्वरकें पठबैत छथिन। ऋषि प्रसन्नतापूर्वक विदा होइत छथि आ महादेव ओतहि विश्राम करैत छथि।

छठम सम्बन्धमे हिमालय, मेना ओ गौरी पर्वत-शिखर पर उपस्थित भऽ पुष्प फल देखि प्रसन्न होइत छथि। तखने ऋषि अबैत छथि। ऋषि हिमालयसँ महादेवक हेतु कन्या-याचना करैत छथिन। हिमालय एहि प्रसंगमे मौने रहैत छथि किन्तु मेना महादेवक दोष-दुर्गुण सभक परिगणना करैत अस्वीकार कऽ दैत छथिन। ऋषि मेनाक उत्तर सूनि क्षुब्ध भऽ स्त्री जातिक दोष सभक बखान करैत भर्त्सना करैत छथिन। पुनः हिमालयकें कहैत छथिन—तोहर परम भाग्य जे महादेव तोहर अर्थी होइत छथि।' हिमालय प्रस्ताव स्वीकार कऽ लैत छथिन। ऋषि महादेवकें अनबा लेल आश्रम जाइत छथि। हिमालय-मेना सेहो विवाहक प्रबन्ध करऽ जाइत छथि।

सातम सम्बन्धमे ऋषिकें विलम्ब होइत देखि महादेव चिन्तित होइत छथि। ताबत प्रसन्न मुद्रामे ऋषि अबैत छथि तथा श्लोक ओ शशिशेखरसिंहक गीत द्वारा महादेवक स्तुति करैत छथि। तखन सभ गोटे मीलि हिमालयक आवास दिस विदा होइत छथि।

आठम सम्बन्धमे विवाह-मण्डप पर हिमालय सपरिवार उपस्थित होइत छथि। गौरीक पसाहनि होइत छनि। महादेवक प्रवेश भेलापर स्वर्गलोकमे दुन्दुभी बाजऽ लगैछ, कुसुम-वृष्टि होमऽ लगैछ। हिमालय राजोपचारपूर्वक महादेवकें अरियाति अनैत छथि। ओठंगर ओ कंकण-बन्धन होइछ। ऋषि विद्यापतिक गीत द्वारा मण्डप परक विसंगतिक वर्णन करैत छथि। तहिना

मेना सेहो **विद्यापतिक** गीत द्वारा महादेवक विसंगति ओ अद्‌भुतताक बखान करैत छथि। ऋषि तकर फेर समाधान करैत छथिन। महादेव गौरी सहित कौतुकागार जाइत छथि। पूर्णमनोरथ भऽ महादेव आश्रम जाय चाहैत छथि। गौरीक विछोहसँ मेनाक मोन उद्विग्न भऽ जाइत छनि। ओ **विष्णुपुरीक** गीत द्वारा शिवक वर्णन करैत छथि। हिमालय **कविरतनक** गीत द्वारा महादेव ओ गौरीक अर्द्धनारीश्वर रूपक गान करैत अपन भाग्यक प्रशंसा करैत छथि।

अन्तिम नवम ओ सम्बन्धमे महादेव ओ गौरीक लीला-विलासक वर्णन अछि। महादेव, गौरी ओ ऋषि वग्मतीक तट पर पहुँचैत छथि। महादेव वाग्मतीक उत्पत्ति ओ माहात्म्यक वर्णन करैत छथि। किन्तु गौरी विमन रहैत छथि। ओ **विद्यापतिक** गीत द्वारा महादेवक विपन्नता कहैत छथिन। गौरीकेँ मानिनी भेलि देखि महादेव **चतुरचतुर्भुजक** गीत गाबि मान-मोचन करैत छथिन। गौरी **विष्णपुरीक** गीत द्वारा कहैत छथिन **'तपसिआ तोरे तपे केओ न भिखारी।'**

ततःपर महादेव नृत्य करबाक इच्छा करैत छथि। ओहि नृत्यक वर्णन **सदानन्दक** गीत द्वारा होइछ। गौरी सेहो मृदङ्गक विविध बोल पर नृत्य करैत छथि। नृत्य-श्रान्त भऽ दुहू गोटा द्यूत-क्रीड़ा करैत छथि। एहि द्यूतक वर्णन **गोविन्द कविक** गीत द्वारा होइछ। महादेव ओहिमे हारि कऽ रूसि जाइत छथि। गौरी **विष्णपुरीक** गीत द्वारा हुनका मनयबाक उपदेश ऋषिसँ मङैत छथिन, कारण नीक वस्तु महादेवकेँ भबिते ने छनि। ऋषि महादेवक अद्‌भुत चरित्र केर वर्णन करैत छथि। गौरी **विद्यापतिक** गीत द्वारा हुनक अद्‌भुत आचरण कहैत छथिन तथा हुनक हाथ पकड़ि मनबैत छथिन। किन्तु संगहि नैहर पठा देबाक अनुरोध करैत छथिन। एहि पर महादेव **विद्यापतिक** गीत द्वारा गौरीक रोष ओ प्रवोध नहि मानबाक वर्णन करैत छथि। दम्पतीकई मान-अभिमान देखि ऋषि **विद्यापतिक** गीत गाबि दुनूक द्वन्द्वसँ भेल पारिवारिक अस्तव्यस्तताक वर्णन करैत छथिन। ऋषि दुनूकेँ सम्मत करैत छथिन।

तखन गौरीक मोनमे महादेवक प्रति किछु संशय सभ भेलनि जकर समाधानमे महादेव ललितगर भाव व्यक्त कयल। इहो वार्त्तालाप गीतेमे होइछ।

हरगौरीविवाह नाटकक कथावस्तु एहिठाम सम्पन्न भऽ जाइछ। एकरा बाद नेपालीय रंगमंचक परम्परागत विधि-विधानक निर्वाह होइछ। तदनुसार गौरी ओ ऋषि करण महेशक रचित शान्ति पदक गान करैत छथि। ऋषि नाट्य-काव्यक प्रशंसा करैत छथि। मंच पर उपस्थित तथा अन्य पात्र सभ मीलि ईश्वर-वन्दना गबैत छथि। वंशमणिक गीत द्वारा नाटकक रचनाकाल, अभिनयक अवसर ओ उपलक्ष्यक कथन कऽ पशुपति-वन्दना, कुराग-गायन-प्रायश्चित्तार्थ हरिहरस्वरूप-वर्णनात्मक वंशमणिक गीत गयबाक संकेत दऽ शान्ति-पदक गान कऽ नटक समाप्त होइत अछि।

पात्र

नेपालक अन्य नाटक जकाँ एहिठाम पात्रक बाहुल्य नहि अछि। प्रस्तावनामे नटी-सूत्रधार मात्र अछि। नाटकक मूल भागमे महादेव, ऋषीश्वर, हिमालय, मेना ओ गौरी—पाँच गोट प्रधान पात्र छथि। महादेवक गण नन्दी-भृङ्गी ऋषीश्वरक शिष्य वासु ओ गौरीक प्रसाधन कयनिहारि विधि (विधिकरी ?)—ई चारि गोट गौण पात्र छथि। ऋषीश्वर समस्त नाट्यकथाक सयोजक छथि। आदिसँ अन्तधरि ओ मंचपर विद्यमान रहैत छथि। 'अंकीयानाट'क सूत्रधारसँ हिनक तुलना कऽ सकैत छी। अन्तर यैह अछि जे 'सूत्रधार' अङ्कीयानाटमे अतिरिक्त पात्र रहैछ जखन कि एहिठाम ऋषीश्वर कथासँ सम्बद्ध मुख्य ओ अनिवार्य पात्र छथि।

कथोपकथन

एहि नाटकक कथोपकथन गद्य-पद्यमय अछि। पद्यमे गीतक उपयाग सभठाम भेल अछि, से राग-ताल-निर्देश-पूर्वक। गीत छोट-पैघ सभ प्रकारक अछि। रचयिताक अपन गीतक संग अन्यो अनेक कविक गीत सभ प्रसंगानु-

कूल कौशलपूर्वक समाविष्ट अछि। किन्तु एहि नाटकक गद्य-भाग अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। स्वाभाविक ओ सरल गद्यक प्रयोग जगज्ज्योतिर्मल्लक विशेषता थिकनि। ई गद्य सभ **वर्णरत्नाकर** ओ आधुनिक गद्यक बीचक हेरायल कड़ी जोड़ैत अछि। मेना ओ ऋषीश्वरक वार्त्तालापक गद्य स्फीत ओ ओजपूर्ण अछि। अनेक ठाम संस्कृत श्लोकक प्रयोग सेहो कयल गेल अछि। किछु श्लोक तँ पुराणादिसँ उद्धृत अछि। शेष श्लोकमे अधिकांश अनुष्टुप छन्दमे अछि। एक-एक गोट श्लोक पञ्चचामर, शार्दूलविक्रीडित, दोधक तथा सुन्दरी छन्दमे अछि।

कथोपकथनमे **'कोणभाषा'**क निर्देश अधिक ठाम देल गेल अछि। ई प्रायः मंचक स्थिति-विशेषक सूचक थिक। **'प्रथम कोण'** मे किछु वाक्य कहि फेर **द्वितीय कोण'**मे किछु वाक्य कहबाक निर्देश अछि। **'द्वितीय कोणक'** संक्षिप्त संकेत **'द्वि को'** देल गेल अछि। एहि **'कोणभाषा'क** प्रयोग नेपालक अन्यो नाटक सभमे भेटैत अछि।

गीतक पश्चात् 'गीतार्थं श्रावयति' एहन निर्देश दऽ कऽ ओही भावक पोषक गद्य-वाक्य कहाओल गेल अछि। किन्तु एहि वाक्यमे गीतक समस्त भाव व्यक्त भऽ जाइक तकर अनिवार्यता नहि देखल जाइछ। अनेक ठाम ओहि निर्देशक पश्चात् कोनो गद्य-वाक्य नहि देल छैक। प्रायः ओ सम्बद्ध पात्रक इच्छा पर छोड़ि देल गेल छैक।

अभिनय शैली

उपर्युक्त **'कोणभाषा'** प्रायः अभिनयेक कोनो प्रकार छल। एहि नाटकक अभिनय शैलीमे कीर्त्तनिञा नाटकक संग समता देखि पड़ैछ। एहू ठाम पात्रक प्रवेश बेरमे अनेक ठाम **'प्रवेशक गीत'क** प्रयोग कयल गेल अछि। किन्तु एहि ठाम गीतक संग पात्रक प्रस्थानो करबाक निर्देश अछि। जकरा **'निस्सारगीत'** कहल गेल अछि। पात्रक प्रवेश गीत चारि गोट अछि जाहिमे दुइ गोट पूर्ण ओ दुइ गोट अपूर्ण अछि। निस्सार गीत आठ गोट अछि आ आठो अपूर्ण अछि।

अनेक ठाम पात्रक प्रवेश ओ निस्सारक बेरमे रागक निर्देशमात्र अछि। नाटकारम्भमे नटी-सूत्रधार द्वारा प्रस्तावना संस्कृते नाटक जकाँ अछि किन्तु अन्तमे समस्त पात्र शान्ति-गीत, ईश्वर-वन्दना, कुराग-प्रायश्चित्त गीत तथा शान्तिपदक गान करैत अछि। तत्पश्चात् एकटा श्लोकमे भरत-वाक्य देल गेल अछि। अर्थात् आदि ओ अन्तमे संस्कृत नाटकक परिपाटीक निर्वाह अछि।

नेपाली नाटकमे कोनो ने कोनो रूपमे निक्षेपणीय पटक उपयोग होइत छल। अनेक अवसर पर प्रमुख पात्रक प्रवेश ओ निस्सार **'जमनीपट्ट'**क प्रयोगक सङ्ग भेल अछि। ई संस्कृत रंगमंचक **'जमनिका'** भऽ सकैत अछि।

विरामचिह्न

नाटकमे **दुइ** प्रकारक विराम चिह्नक प्रयोग कयल गेल अछि। से दुनू विराम-चिह्न गद्य ओ पद्य दुहूमे प्रयुक्त अछि। अल्प विरामक हेतु अर्द्ध तिर्यक रेखा (ˎ) क प्रयोग भेल अछि जे वाम भाग थोड़ेक ऊठल ओ दहिन भाग दिस कनेक झुकल अछि। पूर्ण विरामक हेतु 'दू पासी' (।।) क **उपयोग** कयल गेल अछि। श्लोकार्द्धमे एक पासी (।) क सेहो प्रयोग अछि। पात्रक नाम ओ कथोपकथनक बीचमे, गीतक चरणार्द्धमे तथा गद्य-वाक्यक अन्तर्वर्ती विरामक हेतु अर्द्ध तिर्यक रेखा प्रयुक्त अछि। अभिनय-निर्देश-वाक्य, राग-ताल-निर्देशमे, गीतक चरणान्तमे तथा गद्य-वाक्यक अन्तमे 'दू पासी' क प्रयोग अछि।

सम्पादकीय संकेत

एहि नाटकक सम्पादनमे सौकर्यार्थ किछु संकेतक प्रयोग कयल गेल अछि। यथार्थ पृष्ठक समाप्ति पर लम्ब रेखाक '।' प्रयोग अछि। कल्पित वा संभावित पाठ एहि प्रकारक ( ) कोष्ठमे देल गेल अछि। पत्रक ऊर्ध्व वा अधोभागमे जोड़ल गेल अंश [ ] एहि प्रकारक कोष्ठक अन्तर्गत अछि। पत्रक मूल भागमे छूटल जे अंश पत्रक ऊर्ध्व वा अधोभागमे नहि अँटाओल जा सकैत छल आ कोनो स्वतन्त्र पत्रमे देल गेल अछि ताहि समस्त अंशके [[ ]] एहि प्रकारक कोष्ठक अन्तर्गत देल गेल अछि।

उपसंहार

फोटोसँ प्रतिलिपि करबामे अनेको असौकर्य भेल अछि। अतः शुद्ध-शुद्ध पढ़ि लेबामे प्रमाद होयब ने असंभव अछि और ने अस्वाभाविक। प्रस्तुत पाठ भविष्यमे ओकर और परिमार्जनक पथ प्रशस्त करत। आशा करैत छी जे मैथिली साहित्य ओ ओकर इतिहासमे रुचि रखनिहार सुधी समाजके अवश्यमेव अध्ययनार्थ अनुच्छिष्ट सामग्री भेटि रहल छनि तेँ एहिसँ अवश्ये हुनका सभके सन्तोष भेटतनि।

जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत—

हरगौरीविवाह नाटक

................[1]नं जगति कर्ण्ण इवावतीर्ण्णः ॥

श्रीश्रीजयजगज्ज्योतिर्म्मल्ल महाराज एहने महोदार चरित्र आओर कम्म कत कहव ॥

नटी ‸ धन्य धन्य महाराज, एहना कुल एहने उचित किछु नगर वर्ण्णना मोञो कहइ छञो ॥

सूत्र ‸ अविलंबे कहू ॥

॥ नगरवर्ण्णना नट्युक्ति ‸ गीतं ॥ मालव ॥ चो ॥

वन्दनेवार धएल ठामे ठाम ‸ भगत नगर एहे गुण अभिराम ॥
वेद मङ्गल धुनि अहनिस होइ ‸ दिनकर किरण धरव कञोने गोइ ॥
धरम करम सवका थिर नीति ‸ तेँ फले काहुक होअ न भीति ॥
त्रिभुवन जननी करथि निवास ‸ अचिरेहि देथि सवक अभिलास ॥
भनइ वंशमणि हे जगदम्बे ‸ नृपजगजोति मन पुर अविलम्वे ॥

॥ गीतार्थ श्राव/[2]यति ॥

सूत्र ‸ हे प्रिये भल कहलछ ‸ परन्तु एहना उत्सव ‸ कञोन नृत्य उचित थिक ॥

नटी ‸ हे नाथ ‸ तथी अपनेहि विज्ञ ॥

---

१. यथार्थ पृष्ठ संख्या—१; एक्सपोजर-१२क/मूल हस्तलेखमे आरम्भक कमसँ कम एक गोट पत्रयुग्म नहि अछि तेँ नान्दीश्लोक, नान्दीगीत, सूत्रधार-नटीक वार्तालापक किछ अंश आ जगज्ज्योतिर्मल्लक प्रशस्ति श्लोक नहि भेटैछ । प्रशस्तिश्लोकक अन्तिम चरणांशसँ नाटक उपलब्ध अछि । अतः एतहिसँ यथार्थ पृष्ठक गणना आरम्भ भेल ।

२. यथार्थ पृष्ठ संख्या—२; एक्सपोजर—१३ख

सूत्र ˎ हे प्रिये ˎ श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्म्मल्ल महाराज शिवभक्तिपरायण तह्निका शिवाश्रित जे कथा तथीहि उल्लास ˎ ते हमराहु हरगौरीविवाह नामे जे नाटक महाराजाहिक कएल से नाचू ।।

नटी ˎ एहने उचित ।।

सूत्र ˎ त्वराञ्ो हमरा दुहु व्यक्ति मेना महादेव काछुए जाऊ ˎ चलह ।।

सूत्रनिस्सारगीतं ।। नाट ।। परिमान ।।

उछाह सोहाओन हरक चरीत ˎ
ताहि विशेषे विवाह विहीत ।।

कोणभाषा ।।

सूत्र ˎ हे प्रिये ˎ महादेवक चरित्र सहजहि सुन्दर ˎ विशेष गौरीविवाह ।।
नटी ˎ हमराहु वड ˎ तथी उ । [1]ल्लास ˎ मेना उक्तिप्रत्युक्ति अति विचित्र ।।

द्वितीय कोणे ।।

नटी ˎ एहना उत्सव विलम्ब जनु करु ˎ ।।
सूत्र ˎ अवश्य ।।

इति प्रथमः सम्बन्धः ।।

।। ततो नन्दिभृङ्गि सहितो महादेवः प्रविशति ।। कामोद ।।प्र।।

डिमिकि डिमिकि करे डमरु वजावए ˎ
वसह चढ़ल बूढ धीरे धीरे आवए ।।
तपसिआ कत (कत) भेष वना(व)ए ˎ
साझ गोरि दुहु विहुसि हसावए ।। ध्रुवं ।।
खने कर जप तप खने कत वेशी ˎ
गरले ढरकि परु ओहे परदेशी ।।
रहथि भूत संगे वसथि मसान ˎ
जुगे जुगे जोगिआ धरथि धेआन ।।

---

१. य० पृ०सं०—३; एक्स—१४क

प्रणवि प्रणवि एहु गावे कृष्णराए,
अदबुब थिक हे परमपद पाए ॥[1]

(महा.) हे नन्दी हे भृङ्गी ॥ श्लोकः ॥

शठे कठोर चित्तोहं, भक्ते करुण कोमलः ।
अतो भवन्तौ भक्तौ न, त्यक्तुं क्षणमपि क्षमः ॥

नन्दिभृङ्गिणौ, हे प्रभो ईश्वर भक्तवत्सले हो ॥

इत्युक्त्वा नन्दिभृङ्गिणौ गायतः ॥ कोराब ॥ ए ॥

धवल वसह पर चढल महेश, भसम धवल तनु देखिअ सुवेश ॥
हाडमाल धवल धवल रुण्डमाल, धवल कपाल कर शशधर भाल ॥
शिरहु धवल रह सुरसरि धार, धवल धएल शिर धुथुर मन्दार ॥
शिवक चरण रवि कोटि [सम] धाम, नृपजगजोति कर तसु परणाम ॥[2]

महादेव, हे नन्दी हे भृङ्गी, जहिआ सञो सती देहत्याग कएल तहिआ सञो, मोञे वियोग व्याकुल रहञो, अतष्पर सती हिमालयक गृह अवतार लेलछ, ते चलह ततए जाऊ ॥

[3]उभौ, देवाधिदेव जे आज्ञा ॥

॥ महादेवनिस्सारगीतं ॥ आसावरी ॥ खर्ज ॥

सती विओगे धैरज नहि भेल,
हिमगिर भवन जनम तह्नि लेल ॥

कोणभाषा ॥

महा, हे नन्दी, सती मोरा अर्द्धशरीर ॥

नन्दी, हे प्रभु, एहने ॥ द्वितीय कोणे ॥

नन्दी, हे भृङ्गी, ईश्वरक कार्य्य त्वराए करु ॥

भृङ्गी, हमरा आन कञोन कार्य्य ॥

इति द्वितीयः सम्बन्धः ॥

---

१. य० पृ० सं०—४; एक्स—१४ख
२. रागभजन संग्रह, गीत—९। पाठान्तर नहि।
३. य० पृ० स०—५; एक्स—१५क

।। आसावरी रागेण महादेवप्रविशति ।। कोणभाषा ।।

महा – हे नन्दि हिमालय सन्निधान अएलाहु ।।

नन्दी – हे देवाधिदेव अति रम्य स्थान ।। (द्विको ।।)

नन्दी – हे प्रभो – ई ऋष्याश्रम सन देखइ छी ।।

महा – हिमालय अनेक ऋषि तपस्या करैछ ।। (द्विको ।।)

महा – वड मनोरम स्थान खन एक ओहा बै।[1]सू ।।

नन्दी – जे आज्ञा ।।

।। मालव रागेण ऋषिराश्रमं [वासु सहितः] प्रविशति ।।

।। कोर्णभाषा ।।

आज आक धुथुर अनेक भेटल मालत्यादि नहि भेटले – ई आश्चर्य्य वड

[वासु – जे पावल – से उत्तम] ।। द्विको ।।

(ऋषि –) आज मोरा दक्षिण चक्षुः स्पन्द होइछ – ते अपूर्व दर्शन होमाओ पार ।।

[वासु – बहुत नीक]

।। ऋषिरीश्वरं पश्यति ।।

हे देवेश मोर दशाङ्ग प्रणाम – धन्य मोर भाग्य – आज हमरा तपस्या साफल्य – जे ईश्वरक चरणारविन्द देखल ।।

(महा –) [हे ऋषि कुशलमस्तु]

(ऋषि –) हे परमेश्वर ओहाक गुणानुवाद करै छओ अवधान करू ।।

[महा– ओहाइ विज्ञ ।।]

१. य० पृ० सं०—६; एक्स०—१५ ख

|| ऋष्युक्त गीत || मालव || धए ||

घर नहि संवर पहिरि वघंवर ,
त्रिभुवनपति तोहे देवा , मोरि सेवा लो ||
कओने पुने अपुरुब रूप तपसी ,
वड रसी || ध्रुव ||

भसम आँग दए मशान वास[1]कए ,
पर के दिए सुख ठामे , अभिरामे , लो ||
शीर धरिए गाँग , नारि आध आँग ,
करिए ध्यान समाधी , जोगनिधी , लो ||
नृपजगजोति मति , शिवक चरण गति ,
अवसर विसरह जनु , मोहि पुनु , लो ||[2]

महा , ऋषे साधु साधु ||

[वासु , हे गुसाय , हमहु किछु कहै छी ||

|| वासूक्ति गीतं || सिंदु || चो ||

खाए सिखल हमे ||

सर्व्वे हसन्ति ||

ऋषि , हे सुभागल

समाज गुण , कुसुमक रङ्ग थोर दिने वहि जाए ,
सहजे गुण , मुगाक रङ्ग कथिहु नहि [3] जाए] ||

(महा) , ञोहाञो नन्दिभृङ्गि सहित एतए रहू मोञो हिमालयक दर्शन कए अबै छओ ||

ऋषि , ञोहाक अधीन त्रैलोक्य ||

|| महादेवनिस्सारगीतं || धनाश्री ||ख||

शीतल सौरभे हिमगिरि सोभे ,
ततहि जाएव हमे गौरिक लोभे || कोणभाषा ||

---

१. य० पृ० सं०—७; एक्स०—१६क
२. गीत पंचाशिका, गीत— ८ || पुनर्हर स्तुति नचारी || श्री || चो ||
३. 'रहि' सेहो पढ़ल जा सकैछ।

गौरी कति वडि भेलि छलि दहु ॥ द्विको ॥
आज सहजहि देखवि ह(महु) ॥

[ऋषि ˎ हे नन्दिभृङ्गि खन एक हमरा आश्रम विश्राम करू
नन्दि ˎ सर्व्वथा ॥]

॥ ऋषिनन्दिभृङ्गिणो जमनीपट्ट दत्वा निस्सरन्ति ॥

इति तृतीयः सम्बन्धः ॥

॥ अथ गौरी | [1]सहितौ मेनाहिमालयौ प्रतिशतः ॥

गण्डल गीतं ॥ कौशि ॥ए॥

हरखित गिरिराजे देल परवेश ˎ गोरि मेना दुहु संगे परम सुवेश ॥
रूप गुणे समजुत देखिअ कुमारि ˎ जुवति सवहु पर सेहे वरनारि ॥
विविध रतने तनु पसरलि काँति ˎ कहथि मधुर वोल कत कत भाँति ॥
नृपजगजोति कह न कर कलेश ˎ तुअ अभिमत जत पुरत महेश ॥

हिमा ˎ हे प्रिये हमर महिमा किछु सूनु ॥

श्लोकः ॥ हिमालयोहं विख्यात ˎ स्पर्वता[2]नामधीश्वरः ।
मदवष्टम्भमासाद्य ˎ पृथ्वीभवति निश्चला ॥

मेना ˎ हे प्रभु ˎ ई ˎ एहने ˎ हमरो किछु गोचर सूनु ॥

श्लोकः ॥ एणी विलोचना मेना ˎ रूप शील समन्विता ।
त्वत्पाद यु / [3]गलाम्भोजे ˎ शिरसाधारयाम्यहं ॥

[गौरी ˎ हे तातः हे मातः ˎ किछु विज्ञप्ति हमरो ॥
उभौ ˎ हे प्राणप्रिये पुत्रि ˎ कहु कहु ॥

श्लोकः

(गौरी) ˎ गिरिराज पितस्तव पादयुगं रुचि निर्जित शोण सरोज दलं ।
परमंव तवापि च भक्ति वशा ˎ न्मनसा कलये वसुधा वलये ॥

१. य० पु० सं०—८; एक्स०—१६ख
२. 'विख्यातः पर्वता' उचित होयत
३. य० पृ० सं०—९; एक्स० —१७क

उभौ ˎ साधु साधु ॥]

हिमा ˎ हे प्रिये ञ्जोहाक शील ञ्जोहन थी(क) ˎ परन्तु ˎ कञ्जोन कञ्जोनओ गौरीक चरित्र देखि परम आनन्द होईछ ॥

मेना ˎ हे नाथ बालचरित्र अद्भुत ॥

॥ ततो योगिवेषो महादेवो गीतेन प्रविशति ॥ मालव ॥ ए ॥

पुलकित तनु मोर रे रे तसु गुण सुमरि सुमरि अभिरामेˎ
हृदय जुडाओन रे रे डिठि भरि देखब वदन हिमधामे ॥

कोणभाषा ॥

कञ्जोन व्याज कए गौरी हमे देखबिह ॥ द्विकौ ॥ हम ए वेषे के चिद्गत ॥

॥ मेनामहादेवौ परस्परमवलोकयतः ॥

महा ˎ हे मा[ता] ˎ ञ्जोहाक कन्या कहिनि छथि ॥

मेना ˎ हे प्रभु ˎ एहि भिखारीक उक्ति सुनै छी ॥

॥ मेनोक्ति गीतं ॥ कोराव ॥ चो ॥ |

[1]परतहपुछ मोहि वाढलि भवानी ˎ कतिएक भेलि अछे देखए देह आनी ॥
भीखि वेआजे वास मोर आवे ˎ मनमोहन जोगिया भल गावे ॥ध्रुवं ॥
ए माइ हे मोहि अजगुत लागु ˎ सुतलि गौरि जोगिआ देखि जागु ॥
जाहि जोगिआ देखि दुरहि पराई ˎ ताहि जोगिआ कोर गोरि खेलाई ॥
भनइ विद्यापति मदायिनि सूनु ˎ ओ जोगिआ वर होएत पुनु पूनु ॥

हे गिरिराज ˎ अओरो कौतुक देखई छी ˎ ओ जोगिआ हमरि कुमारी देखि हसैछ ॥

[हिमा ˎ जोगी कौतुकी]

॥ मेनोक्ति गीतं ॥ आसावरी ॥ चो ॥

देखहो गे माइ हे जोगि रङ्गरसिआ ˎ
गोरि मुख हेरि हेरि हसए विहुसिआ ॥

---

१. य०पृ०सं९—१०; एक्स०—१७ख

विभूति भूषण गिम फणिमणि शोभे ‸ राजकुमारि कत लावए लोभे ।। |
[1]शिर शशधर करे डमरु वजावे ‸ चञ्चल लोचन मनमथ भावे ।।
पुनुपुनु आवए हटल न मान ‸ कवने परि बोलव वचन निदाने ।।
भनइ सदानन्द करह उछाहे ‸ वड समुचित गोरि शंकर नाहे ।।

हे जोगी तोहर ई कञोन भाँति ‸ हाडमाल साप टाड जटाजूट
भस्मकूट शूल हाथ डमरु बजाए की मँगै छह इ ‸ अन्न भिक्षा लेह ।।

।। महादेवो भिक्षांत्यक्त्वा सोरठिरागेण निस्सरति ।। कोणभाषा ।।

हमे ऋष्याश्रम जाएब ।। द्विको ।। एतए ऋषि पठओबाह ।

मेना ‸ हे गिरिराज बड आश्चर्य ‸ जोगी भिक्षा त्यजि गेलाह ।।
हिमा ‸ जोगी भङ्गी रङ्गी ‸ त[कर] मन के जान ‸ कुमारी योग्य भेलि ‸
एक शिखर भए विवाहक चिन्ता | [2]करू गए ।।
[मेना ‸ प्राणेश्वर ‸ हमे स्त्री जातिका पुरुष आज्ञा मानिअ ‸
एहे धर्म चलू] ।।

।। मेनाहिमालयौ गीतेन निस्सरतः ।। सोरठि ।। ख ।।

गन्धर्व्व गान कर गगन दुंदुभि वाज ‸ देव नारि सवे नाचे ‸
रूपे गुणे आगरि त्रिभुवन नागरि ‸ के नहि गोरि मोरि याचे ।।

।। कोणभाषा ।।

हिमा ‸ हे प्रिये हमर घर सर्व्व संपूर्ण विवाह जत लाइअ सेहे सार्थक ।।
मेना ‸ ञोहा हितज्ञ ।। द्विको ।।
मेना ‸ इन्द्रादि देवगण मँगैछ कन्या ।।
हिमा ‸ ओहे शिखर गए विचारु ।।

इति चतुर्थः सम्बन्धः ।।

।। जमनीपट्टं दत्वा नन्दिभृङ्गि सहित ऋषिः प्रविशति ।।
ऋषि ‸ हे नन्दीश्वर ‸ ईश्वर सञो दर्शन पुनु होएत की नही ।।

---

१. य० पृ० सं०—११; एक्स०—१८क
२. य० पृ० सं०—१२; एक्स —१८ख

[उभौ - ऋषोश्वर अवश्य होएत ।

॥ महादेवो मालव रागेण प्रविशति ॥ कोणभाषा ॥

त्वराए जाएब ॥द्विको॥ आहाहा कहेन ![1] गौरीक रूप ॥

॥ महादेवो नन्दिभृङ्गिऋषीन् पश्यति ॥

सर्व्वेंमहादेवचरणेपतन्ति ॥

ऋषि - हे नाथ - अपने बड सानन्द स्वरूप देखइ छिअ[2] ॥

महा - हे ऋषिराज विस्तार कत कहब - ञोहाञो हिमालय पाहि कन्या माँगि दिअओ - हमे विवाह करव ॥

ऋषि - मोर बड़ भाग्य मोञो जाई छञो ॥

॥ ऋषिगर्गीतिन निस्सरति ॥ गोपीवल्लभ ॥ प्र ॥

हरक चरित्र विचित्र पवित्र वसह चढल गिरि आवे ।

हमहु जाएव गिरिराजक सन्निधि ते सुरगण सुख पावे ॥

कोणभाषा ॥

धन्य मोर भाग्य ईश्वरे मोरा [क]े आज्ञा कएल ॥ द्विको ॥

हिमालयहुक धन्य भाग्य जह्निका ठामे महादेव याञ्चा करै छथि ॥

[महा - ऋषि हमे ओतए पठओलाह - एहि मनोहर - ऋषि आश्रम खनेक रहव -

उभौ - देवादेश प्रमाण] ॥

॥ जमनीपट्टं दत्वा महादे[3]वो निस्सरति[4] ॥

इति पञ्चमः सम्बन्धः ॥

---

१. य० पृ० सं०—१३; एलस०—१९क

२. 'छिअह' लीखि 'ह'केर माथ पर तीन गोट ठाढ़ रेखा देल छैक। ई 'ह' के कटवाक संकेत लगैछ।

३. य० पृ० सं०—१४; एक्स०—१९ख

४. एतऽ छूट चिह्न दऽ ऊपरमे एकटा अक्षर छैक जे दुष्पाठ्य छैक।

॥ गौरी सहितौ मेनाहिमालयौ मालव रागेण प्रविशतः ॥

॥ कोणभाषा ॥

हिमा , हे प्रिये एहि शिखर कहेन कहेन पुष्प सवे ॥

मेना , हे प्रभु आमोदे प्रमोद होइछ ॥ द्विको ॥

मेना , हे प्रभु अनेक अनेक रङ्ग फल सवे देखई छी ॥

हिमा , तेहि एतए अएलाहु ॥

हिमा , एहना रम्य स्थल खण एक विश्राम करु ॥

मेना , हे प्रभु जोग्य ॥

॥ऋषिः पहडिया रागेण प्रविशति ॥ कोणभाषा ॥

हिमालयक वड भाग्य ॥ द्विको ॥ हिमालय पर विधाताक वड कृपा ॥

॥ हिमालय ऋषिं दृष्ट्वा प्रणमति ,

हमरा कन्याविवाहक समय ञोहाञो अएलाहु वड भाग्य ॥

ऋषि , हे गिरिराज ञोहाक[1] वड भाग्य , ते हमे अएलाहु , परन्तु ञोहाञो वर केओ विचारलछ की नही ॥

हिमा , अनेक देवता मगई छथि , से व्यक्त नही कएल छए ॥

ऋषि , चतुर्द्दश भुवनक सृष्टि स्थिति प्रलय कर्त्ता देवाधिदेव महादेव ञोहाक कन्या मँगई छथि ते हमे अएलाहु ॥

हिमालयो विस्मितस्तूष्णीं तिष्ठति ॥

मेना , हे ऋषीश्वर , एहनि कहिनी ञोहाए बाजल छी , ओ मसानवास भङ्ग ग्रास , वृषयान विषपान , हाडमाल वाघछाल , भूत सङ्ग प्रेतरङ्ग , कर कपाल व्याल हार , जटाकू (जू) ट विकट रूप , धूलि धूसर नाममात्र ईशर , एहना के कण्या के देत , कञोने साजेवा (जे ?) , ओ , विआह करए अओताह , किछु सुनु ॥

---

१. य० पृ० सं०—१५; एक्स०—२०क

।। मेनोक्ति गीतं ।। पह | [1] ड़िया ।। टुटापरि ।।

कैसे आओत विआहक साज , नागट उमत तह्नि न लाज ।।
गजक चरम बाघक छाल , ओढिए धरिए कर कपाल ।।
भसम धवल सगर देह , गिरिसुता कैसे करति नेह ।।
नृपजगजोति एहेन भान , शिव छाड़ि तिनि लोक न आन ।।[2]

[गीतार्थं श्रावयति]

ऋषिष्कर्ण्णे हस्तौ दत्वा रोमाञ्चमभिनीय ,

[स्त्री जाति विविध भाँति , नीच गति , चपल मति , पाप पूर , धर्म्म दूर , बहुत बाज , किछु न लाज , रह न थीर , जनि समीर , अधिक त्रास , न मान त्रास , नासिक[3] बुद्धि , मन अशुद्धि , परम मूढ़ , हृदय गूढ़ काकचेष्ट , कामपुष्ट , वोल सुहर , कर्म्म जहर , वामा नाम , कपट धाम , काम कोह , लोभ मोह , इत्यादि संयुक्ति तोहे (?) , हे मदाइनि , त्रैलोक्यनाथ महादेव के एहन वजई छह , शिव शिव शिव ।।]

हे मेना तोहे स्त्री जाति , महादेवक स्वरूप की जानह , सुनह , ।।

ऋष्युक्ति गीतं ।। पहड़िया ।। ए ।।

गज वाध चरम सोभए कत अङ्ग , भसम धवल कएल जारि अनङ्ग ।।
नागट उमत के जानत भेद , जह्निक सरूप नहि बुझए वेद ।।
हुनि भल चिह्न गिरिराज कुमारी , जह्निलाइ भेलि जुगे जुगे तपधारी ।।
नृपजगजोति बुझावए [4] भाव , सवहि काल शिव शरण सोहाव ।।[5]

[गीतार्थं श्रावयति [6] ।।]

हे मेना अओरो सुनह , ।।

---

१. य० पृ०सं० —१६; एक्स०—२०ख
२. नानारागगीत संग्रह, गीत—१५ । पाठान्तर—आवत, नागत ।
३. 'सि' पंक्तिक उपरमे लिखल अछि ।
४. य० पृ० सं० —१७; एक्स०—२१क
५. नानारागगीत सग्रह, गीत-१६ । भक्तिरस नचारी गीतं । पाठान्तर— बुझर, युगे जुगे ।
६. मूलमे 'श्रावयवति' अछि ।

अपना सुतके सवे कह नीक, गुणि जन बूझए ऊन अधीक ॥
सुवुधि बुझाओब किछु न कलेस, अवुधिक मन हो हरि उपदेश ॥
स्वगुण प्रकाश कहैते नहि लाज, तकरा कहला कीदहु काज ॥
प्रसव वेदन गुरुविनि पए जान, बाँझ न वुझ तकर अनुमान ॥
नृपजगजोति कह मेदिनि थोर, वुझनिहार एक नन्दकिसोर ॥

तोहर परम भाग्य, महादेव तोहर अर्थी होइ छथि ॥

[मेना, हे नाथ, जे जोगि भेष कए, अएलाह, सेहे नहि महादेव ॥
हिमा, हे सुन्दरी, ओ अनादि ब्रह्मस्वरूप, हुनका के एहन न व (ा) जिअ,
विवाह उद्यम करु ॥] [1]

हिमा हे ऋषीश्वर ओहाओ सर्व्वज्ञ जे ओहाक इछा, ॥

ऋषि, हे गिरिराज, मोञे महादेव लेआए अनइ छञो ॥

ऋषि: : केदारा /[2] रागेण निस्सरति ॥ कोणभाषा ॥

ईश्वर कृपाए हमरा कार्य्यसिद्धि भेल ॥ द्विको ॥ ईश्वर कार्य्य सिद्धि होएत, ई कञोन चित्र ॥

[हिमा, ह प्रिये विवाह कार्य त्वराए करु
मेना[3], हे प्रभु करव,]

मेना हिमालयौ जमनीपट्टं दत्वा निस्सरत: ॥

इति षष्ठः सम्बन्धः ॥

---

१. ई अंश पत्रक नीचाँमेलीखि अन्त मे पंक्ति संख्या देल छैक। किन्तु पत्रक तत्संख्यक मूल पंक्तिमे छूट चिह्न नहि देल अछि।

२. ग० पृ० सं०—१८; एक्स०—२१ ख

३. 'मेना' शब्द एहूठाम छूटल छैक तें छूट चिह्न दऽ कऽ ओहूसँ ऊपरमे लिखल छैक।

॥ ततो जमनीपट्टं दत्वा महादेवप्रविशत ॥

महा ‸ हे नन्दीश्वर ऋषि का किए विलम्ब भेल ॥

नन्दी ‸ मोञे द्वार भए‸ बाट हेरइ छओ ॥

॥ तत ऋषि वास् ‸ गीतेण(न) प्रविशत: ॥ [मालव ॥ चो ॥

तरुअर पात झरिए झरि दुर गेल ‸ पुनु नव पल्लवे भेल ‸
सती विओग हरहि हिअ हारल ‸ होएत दुहु अबे मेल ॥
सकल मन सानद रे परिहरि जल किछु दंद ॥
दशहु दिश[1]]

कोणभाषा ॥

(ऋषि) त्वराए जाएव ॥ द्विको ॥ महादेवक चरण वन्दना करव गए ॥
नन्दी ‸ ऋषिंदृष्ट्वा वदति ॥

हे ऋषीश्वर ञोहाहिक पथ हेरइते छलाहु त्वराए भीतर चलू ॥

ऋषि ‸ जे आज्ञा ॥

॥ ऋषिर्म्महादेवं दृष्ट्वा कृताञ्जलि: स्तौति ॥]

[2]श्लोक: ॥ अश्वमेध सहस्त्राणि ‸ वाजपेय शतानि च ।
महेशार्च्चन पुण्यस्य ‸ कलां नार्हन्ति षोडसीं ॥

[श्रीश्री जगज्ज्योतिर्मल्ल महाराजनन्दन‸ शशिशेषर सिंह कएल ‸
ञोहाक भक्ति गीत गवै छी ॥

॥ धना ॥ चो ॥

तोहर कृपाए रह दश दिकपाल ‸ मोञे कि कहव हर तोहहि कृपाल ॥
हर विनति हमार‸ सरण तोहार ॥ ध्रु ॥
महिमा तोहर कहव कञोने मती॥‸ जनमे जनमे शिव तोहे पए गती ॥
अलपहु भगति होअह परसने ‸ आक धुथुर फुले पुज सवे जने ॥
सीर मंदाकिनि शशधर भाल ‸ बाघ चरम ओढ भूषण व्याल ॥
सिधि निधि दाता जगत किसान ‸ शशिशेषर केसरि एहो भान ॥]

महा ‸ हे ऋषीश्वर ‸ कञोन वार्त्ता॥

ऋषि ‸ अविलम्ब प्रयाण करु ॥

---

१. गीत अपूर्ण अछि ।
२. य० पृ० सं-०—१९; एक्स०—२२ क

।। सर्व्वे मिलित्वा गीतेन निस्सरन्ति ।। मल्लारी ।। प्र ।।

बसह धबाओल समीरण जीनि ,
पाँचे बदन हर लोचन तीनि ।।

कोणभाषा ।।

महा , हे ऋषीश्वर , एहने बेगे अओरो किछु चलु ।।
ऋषि , जे आज्ञा ।। द्विको ।।
ऋषि , हे नाथ एहा सञो , ओहो विवाह मण्डप देखइ छी ।।
महा , मधुरहासेन ऋषिं विलोकयति ।।

इति सप्तमः सम्बन्धः ।।

।। सपरिवारो हिमालयो जमनीपट्टं दत्वा प्रविशति ।।

हिमा , हे मेना , विवाहक लग्न निकट आएल , ईश्वर नहि अ[1]एलाह ।।
मेना , ओहाञो ओहने वर जोहल ।।
[मेना , हे दायिलोके गौरीक पसाहनि करू ।।
विधि , मंञो ओहे करं छी , गौरीमुद्दिश्य ,
ए वेटिआ एतए आऊ , पसाहनि करब ।।
गौरी , अएलाहु] ।।
आसावरी रागेण महादेवप्रविशति ।। कोणभाषा ।।
महा , हे ऋषीश्वर वड रम्य स्थान , ।।
ऋषि , गौरीक गुणे ।। द्विको ।।
ऋषि , हे ईश्वर , विलम्बि चलु ।।
महा , ऋषि उत्तम कहर ।।]

हिमा , प्रिये , कुसुम वृष्टि होइछ , स्वर्ग्ग अनेक दुन्दुभि वाद्य वजइछ ,
मोरे जाने महादेव अएलाह , मोञो आगु गए लेआए , अनवाह ।।
हिमालयो गत्वा महादेवं राजोपचारैस्संपूज्य गृहमानयति ।।

---

1. य० पृ० सं०—२०, एक्स—२२ ख

हिमा ॱ हे ईश्वर वड भाग्य मोर ॱ ञोहाक चरण कमल देखल [मोञे राजोपचार पूछा करै छञो ।।]

।। महादेवः सलज्जमधोमुखस्तिष्ठति ।।

[हिमा ॱ हे ऋषि पुङ्गव ॱ ईश्वर सहिते ॱ विवाह मण्डप विजय करू ।। वासु ॱ अट्टाट्टहासेन हसति ।। तत्र मण्डपे ॱ]

हिमा ॱ लग्न निकट आएल विलम्ब जनु करिअ ।।

ऋषि ॱ हें गिरिराज ॱ विलम्बक अवसर नही ।।

हिमा ॱ हे ऋषीश्वर सवे सामग्री उत्पन्निएअछि ।। ।

ततः कङ्कण वंधनं ।।

ऋषि ॱ हे ईश्वर ॱ पहिले पाद प्रक्षालन करू ।।

महा ॱ अवश्य ।।

ऋषि ॱ हे गिरिराज ॱ ऊखरि ॱ मूसर ॱ साठी धान ॱ पिअर सूत ॱ आम्वाक पात आनि दि(अ) [२]।।

[[| १ मारु धनाश्री ।। चो ।।

जय जय मङ्गल २ ।। ध्रुवं ।।

पिअर सूत वेढव नव जना ॱ ए विधि सोहथि विआह रचना ।।
हर कर कंकण प्रथमहि फेर ॱ विहुसि विहुसि मुनि मुख सवे हेर ।।
हर कर कंकण दोसर फेर ॱ आठहु जना आठ दिस घेर ।।
हर कर कंकण तेसर फेर ॱ देखितहि सव (मन) दुख दुर गेल ।।
हर कर कंकण चारिम फेर ॱ सुरगणे कुसुम वृष्टि कए देल ।।
हर कर कंकण पाचम फेर ॱ किंनर कौतुक गावए लेल ।।

---

१. य० पृ० सं०—२१, एक्स०—२३ क

२. एहि ठाम (पत्रक द्वितीय पंक्तिमे) छूट चिन्ह देल छैक किन्तु पत्रक कोनो कातमे सन्दर्भ सङ्गत छूटल अंश लिखित नहि छैक। वस्तुतः एहि सन्दर्भक एकटा सम्पूर्ण गीत एक्स०—१क पर अछि जे 'एक' अङ्क सन चिह्न दऽ कऽ आरम्भ कयल गेल अछि। अतः एक्स—१क केर गीत (जे सौंसे पत्रमे अछि) एतऽ य० पृ० सं०—२१; एक्स०—२३क मे द्विकोष्ठमे निबद्ध कऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि।

हर कर कंकण छठम फेर, हरषित देवनारि सब खेल ॥
हर कर कंकण सातम फेर, एकहि अओक कुतूहले ठेल ॥
हर कर कंकण आठम फेर, सकल सुरासुर आनन्द भेल ॥
साठिक चाउर आवक पात, कंकण बाधव शंकर गात ॥
नृपजगजोतिमल्ल कौतुके गाव, लाख एक दुइ बुझए भाव ॥[1]]]

॥ ऋष्युक्ति गीतं ॥ आसावरी खर्जे ॥

कौतुक एक बड भेला, जखने महादेव वेदी गेला ॥
जटाँ हलु अँकुसि लाई, झिकइते सुरसरि(गेलि)वढिआई ॥
वसहए हलु कुश खाई, लावा देखि फणि उठल फोफाई ॥
लावा भासल जाई, भूखल वासुकि विछि विछि खाई ॥
वाघ छाल भासल जाई, फणि फुफुकारे वसह विधुआई ॥
विद्यापति कवि ईश चुमाउ, रूपनारायण होथु चिराउ ॥[2]

---

१. एक्स०—१क अन्तर्भुक्त।

२. ई गीत परिवर्त्तितरूपमे मिथिलामे प्रचलित अछि। प्रचलनमे एकर दुइ गोट रूप अछि।

(क) कवीश्वर चन्दाझाक सङ्कलन, गीत—१६

चानन भरल वटाय। उमत सदाशिव भसम लोटाय ॥
मनाइनि देखिअ जमाय। हमनै परीछव एहन जमाय ॥
गरा देल दोपटा लगाय। उर फनिपति उठलाह फुफुआय ॥
जटा देल अकुशी लगाय। शिर सुरसरि जल गेली वढिआय ॥
वेदी देल लावा छिड़िआय। भूखल वासुकि चुनिचुनि खाय ॥
सुकवि विद्यापति गाव। हर परसन वर गिरजा पाव ॥

(ख) मिथिलागीतसंग्रह, खण्ड—१, मित्र-मजुमदार,गीत ९०३

हे मनाइनि देखह जयाय।
सिवक माथ फुटल जटा। आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
जटा देल अकुसी लगाय। आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
झिकितहि सुरसरि गेलि बहराय ॥
वेदी देल लावा छिडिआय। आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
भूखल वासकि विछिविछि खाय।
वट्टा भरि घोरल कसाय। आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
उमत महादेव भसम लगाय।
भनहि विद्यापति गाओल। आगेमाइ गौरिसहित वर कोबर जाय ॥

ईश्वर चरित्र जेहि तेहि भाँति सुन्दर ।।

(मेना ‸) [हे ऋषीश्वर हमरो गोचर सुनु ‸] ।।

।। मेनोक्ति गीतं ।। मालव ।। ख ‸ ए ‸ [चो] ।।

पञ्चान | [1]न पुरमथन भयङ्कर शंकर नाम कवने धरिआ ‸
तिनि नयन हर एक हुताशन न जानए कुल कवन अवतरिआ ।।
माए न वाप साप संगे खेलए मेलए भसम दिगन्त भरी ‸
मनमथ मारि नारि आलिंगअ उमत वुझावव कञोने परी ।।
[पावनि गाँग मथा जदि थोवहि गोवहि काइ जटा विप (ष?) नी
संसय तोरि जे गोरि बुझावए इथि अनुन्चित अनुचित अपनी ।।]
भनइ-विद्यापति सुनह मदाइनि कञोने वुझाओत जगत गुरू ‸
राजा शिवसिंह रूपनारायण सकल याचक जन कलपतरू ।।

हे ऋषीश्वर ‸ महादेवक अति विचित्र चरित्र बुझि नहि जाइ छए ।।[2]

[[| १ वरारी ।। ‸ ।।

विहित विवाह उगारव ‸ मृगमद चन्दन गारव ‸
माइ हे ‸ उवटन साजव रे ।।
ई सवे हुनि न सोहावए ‸ आक धुथुर पत्र भावए ‸
माइ हे ‸ आँग भसम लावए रे ।।
विषम भुजगमय भूषण ‸ अओर कहव कत दूषण ‸
माइ हे ‸ झाँखव अनुखन रे ।।

---

१. य० पृ० सं०—२२; एक्स०—२३ ख

२. एहि ठाम वक्ररेखा जकाँ विचित्र छूट चिन्ह बनाओल अछि ।
एक्स०—१२ क पर 'एक' अङ्क सन छूट सङ्केतक चिन्ह दऽ 'वरारी' रागमे एक गोट गीत अछि जे ओहि पत्र पर पाँच पंक्तिमे सम्पन्न भेल अछि। ओहि गीतक प्रसङ्गसँ निश्चय होइछ जे एही स्थलक छूटल गीत थीक । अतः ओहि गीतकेँ एतऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि ।

आँजव नयन कञोने,भाँनि , पसरए सुरुज अनल काँति ,
माइ हे , कर मोरा होअ साँति रे ।।
नृपजगजोतिमल भाने , ओहे हर सबक निदाने ,
माइ हे , जगजन जाने रे ।।[1]]]

।। सर्व्वेमिलित्वा कौतुकागार गीतं गायन्ति ।। धनाश्री ।। प्र ।।

शिवे सिरिजल एहे त्रिभुवन , त्रिभुवन धारण कारण ।।
जय जय मङ्गल सर ।।
फणिमणि सोहित सुन्दर , सुन्दर ।[2]र धवल महेशर ।।
अनल चाँद रवि लोचन , लोचने देखि दुख मोचन ।।
धरिए अभय वर दुइ कर , दुइ कर त्रिशूल डमरु धर ।।
नृपजगजोति गाव कोवर , कोवर गाने पापहर ।।

यहा , हे गिरिराज हमे पूर्ण्ण मनोरथ भेलाहु[3] , अतप्पर , हमरा अनुज्ञा दिअओ , हमे आश्रम जाञो ।।[4]

(हिमा .) [[४ हे नाथ , मोरा किछु गोचर करे छञो ।

।। हिमालय मेनोक्ति गीतं ।। मालव ।। चो ।।
तुअ पद जोर , सकल सुरासुरे वन्दिअ ,
कि पुर आशा , सदय हृदय तोहे दिगवासा ।।
विनब मञो ओरे , गोरि मोरि प्रतिपालवि ,
कि जत जिव , ततहि बेआपित , तोहे,शिव ।।
गिरि पर मोर , गगन गरज सुनि हरखए ,
की जैसन , तहेन देखि हमे , त्रिनयन ।।

---

१. एक्स-१२ क केर पहिल पाँच पंक्तिक गीत एतऽ कोष्ठद्वयम निबद्ध कऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि ।
२. य० पृ० सं०—२३ , एक्स०—२४ क
३. एहि ठाम छूट चिह्न (X) ओ चिह्नक ऊपरमे '४' अंक देल छैक ।
४. एतहु (v) एहन छट चिह्न अछि । आगाँ २४ख पर लिखित वाक्य ओ गीत एहि वाक्यक बादे समीचीन अछि ।

अविनय थोर, जे किछु पडल मोर,
सेहे सवे, की अविरल, खेमह कृपा कए, विसेसर ॥
आनन्दे नोर, अओर पुलके पुर तनु मोर,
की निज मति, भनए भगति नृपजगजोति ॥
गीतार्थं श्रावयति ॥ ॥ [1]]]

हिमा, हे ईश्वर, ओहाञो चतुर्दश भुवनक अधिपति, जहेन इच्छा हो ॥
॥ महादेवस्सगणो गीतेन निस्सरति ॥ देशाख ॥ ए ॥

विहित विवाह काहि नहि लोह,
जनमे जनमे हर[2] गौरिहि सोह ॥

कोणभाषा ॥

महा, हे पार्वति, ओ हाञो अवला, एहि वसह चढि लिअओ ॥

गौरी सलज्जं मधुरं विलोकते ॥ द्विको ॥

ऋषि, हे ईश्व। [3]र, गौरी राजकन्या, अति कोमल, नहु नहु चलू ॥
महा, हे ऋषीश्वर सर्व्वथा ॥ ॥
मेना, हे प्रभु गौरी बिनु उद्वेग वड होइछ ॥
हिमा, ओ त्रैलोक्यनाथ ॥
मेना, हे प्रभु हमर गोचर सूनु ॥

॥ मेनोक्ति गीत ॥ सौहै ॥ प्र ॥ ए ॥

भल शिवशंकर भोरा, बुझल जतीपन तोरा, अति गोरा लो ॥
तपोवन अछल तपसी, थिकह सकलगुण रसी, शिर शशी लो ॥

---

१. य० पृ० स०--२३; एक्स०—२४क मे छूटल हिमालयक गद्य कथन एवं गीत एक्स०--२४ ख पर 'चारि' अंक लीखि कऽ अंकित अछि। अतः ओहि समस्त अंशके कोष्ठ द्वयमे निबद्ध कऽ य० पृ० सं०--२३, एक्स०—२४क मे अन्तर्भुक्त कऽ देल गेल अछि।

२. 'हम' एवं 'हस' सेहो पढ़ल जा सकैछ।

३. य० पृ० सं०—२४; एक्स—१ख

जप तप सबे दुर गेला, रमणि रङ्ग मन देला, इ कि भेला लो ॥
कपट बोलथि मधुवानी, हरलन्हि मोरि भवानी, अति ज्ञानीलो ॥
काँधहि रुण्डेरि माला, पहिरण बाघेरि छाला, फणिमाला लो ॥
विष्णुपुरी शिवदासे, परिपूरथु मोर आसे, दिगवासे लो ॥

[1]हिमा, ओ ईश्वर त्रैलोक्यनाथ, हुनक चरित्र तोहे की जानह, भल ठाञो हमरा कन्या गेलि, ईश्वरे, स्नेहे अर्द्ध शरीर, कैलि छिअथि से मोञे कहै छञो सुनु ॥

॥ हिमालयोक्तिगीतं ॥ धनाश्री ॥ [प्र] खर्ज ॥

जय जय शङ्कर जय त्रिपुरारी, जय अधपुरुष जय अधनारी ॥
आध धवल वर आधा गोरा, आध बाघ छाल आध पटोरा ॥
आध योग आध भोग विलासा, आध पिणाक आध नगवासा ॥
आध हाल माल आधा मोति, आध चन्दन शोभे आध विभूति ॥
आध चाँद आध सिन्दुर सोहे, आध विरूप आध जग मोहे ॥
भने कविरतन[2] विधाता जाने, दुइ कए बाटल एक पराणे ॥[3]

---

१. य० पृ० सं०—२५; एक्स०—२क

२. मूलमे 'कविरतन' के पंक्तिक ऊपरमे दुहू दिससँ लम्बरेखासँ घेरि कऽ पत्रक अधोभागमे 'विद्यापति' विकल्प पाठ देल गेल अछि, किन्तु 'विद्यापति' रहने छन्दोभंग भऽ जाइछ,

३. ई गीत 'नेपालपदावली' मे भणिता-विहीन गीतरूपमे भेटैछ। गीत द्रष्टव्य थिक—

जए जए शङ्कर जए त्रिपुरारि जए अधपुरुष जए अध नारि ॥ध्रु०॥
आधा धवल आधा तनु गोरा आध सहज कुच आध कठोरा ॥
आध हडमाला आधा मोती आध चन्दन सोभे आध विभूती ॥
आध चेतन मति आधा भोरा आध पटोरे आध मुज डोरा ॥
आध जोग आध भोग विलासा आध पिनाक आध नगफासा ॥
आध चान्द आध सिन्दुर सोभा आध विरूप आध जग लोभा ॥

—विद्यापति पदावली, भाग-१, पृ० ३७५-७६, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

हे मेना, गौरीक विवाह संपूर्ण भे। [1]ल, अतःपर, हमरा अन्तःपुर जाऊ ।।
मेना, हे प्रभु, एहने योग्य ।।

।। मेना हिमाल[यौ गीतेन निस्सरतः ।। मालव ।। ख ।।

शिवक सरूप मुनिहु नहि जानी,
एक ओहे जानथि मोरि भवानी
शिव के चरण शरणं ।।ध्रु.।।

कोणभाषा ।।

(हिमा,) हे मेना, धन्य मोर भाग्य, चतुर्दश भुवनाधिपति श्रीमहादेव जमाता,,

मेना, ईश्वरहि कृपाञो ।। द्वितीय (कोणे) ।।

मेना, धन्य मोरि कोखि, जथि भवानी जन्म लेल,

हिमा, तह्नि भवानी शंकर स्मरण करैते, रहव गए ।।]

इत्यष्टमः सम्बन्धः ।।

।। ऋषिगौरी सहितो महादेवो वराली रागेण प्रविशति ।।

कोणभाषा ।।

महा, हे ऋषीश्वर, ई वाग्वती नदो अति पवित्र हमरा हास्य सञो ई वहिर्भूति भेलिह ।।

यैह गीत रागतरङ्गिणीमे धनछी रागक शाम्भवी प्रभेदक उदाहरणमे कविरतनक भणिता युक्त भेटैछ। रागतरङ्गिणीमे पाठान्तर कम अछि किन्तु जे अछि से विशेष ध्यान देबा योग्य। रागतरङ्गिणी (पृ० १०५)क गीत निम्न-रूपक अछि—

जय जय शङ्कर जय त्रिपुरारी। जय अधपुरुष जए अधनारि ।।
आध धवल तनु आध तनु गोरा। आध पटोर आध मुज डोरा ।।
आध जोग आध भोग विलासा। आध पिनाक आध नगवासा ।।
आध सिन्दुर विन्दु आध विभूती। आध हाडमाल आध गजमोती ।।
भने कविरतन विधाता जाने। दुइ कए बाँटल एक पराने ।।

१. ध० पृ० सं० —२६; एक्स०—२ख

Scanned by CamScanner

ऋषि , अति सुशीतल जल ॥ द्विको ॥

ऋषि , हे ईश्वर , ञोहाञो पशुपति नामे , कञोन , ठमा रहिअ ॥

महा , एहे अएलाहु , से ठमा ॥

महा , हे ऋषीश्वर , ई हिमालयक प्रत्यन्त पर्व्वत ई नेपाल मण्डल अति पवित्र , तथुहु ई वाग्मती नदी , ई पशुपति स्थान , ई गुह्येश्वरी पीठ , ई पृथ्वीहि सार थी [क] ॥

ऋषि , हिमाद्रेस्तुङ्ग शिखरा , त्प्रोदभूता वाग्वती नदी ।
भागी[1]रथ्या: शतगुणं , पवित्रं तज्जलं विदुः ॥
गोकर्ण्णस्य च प्राचीत: , पशुपतेरुत्तरेण च ।
तत्र स्नात्वा हरेर्लोक , मुपस्पृश्य जलं तथा ॥
त्यक्त्वा देहं नरो याति , ममलोकं न संशय: ।
स्रवन्तीनां वरा पुण्या , वाग्वती सर्व्वतो मना ॥

ञो सवहि वचने , वराह पुराणादि जकर माहात्म्य कहलछ , से नेपाल मण्डल इहे थी (क) ॥

महा , ईहे ॥

महादेबो गौरींप्रति

हे गौरी इहाका वैमनस्य सन देखइ छी कहेने ॥

[गौरी , वैमनस्य कहै छञो ॥]

॥ गौर्य्युक्ति गीतं ॥ बराली ॥प्र॥

अमा किने गमावति गोरि ,

सकल संपति मइ - जोहि अएलहु , पावल भसम झोरि ॥
न घर संवर न पिठि अंवर , न मिल पैंच उधारे ,
तनय वापुर भूषे बेआकुल , किने मए देव अधारे / [2] ॥
वासुकि जीउत पवन पिउत , हरे जीउव विष खाई ,
सेवक स्वामि दुहु भल मिलल , हमर कओन उपाई[3] ॥

---

1. य० पृ० सं०—२७; एक्स०—३क
2. य० पृ० सं०—२८; एक्स०—३ख
3. 'उपाई' मे 'प' अक्षर पर छिद्र जकाँ छैक ।

पेट पटकल गाल चोटकल, पाकल भौंहेरि गोछी,
ताहि बुढा हाथ ओ विहि देलहु, ते मए पापिनी धोछी ॥
माइ न सोचल वापे न खोजल, खोजल दैव अपने,
विहिक लिखल मेटि न पावए, झाखिए मनहि मने ॥
भने विद्यापति सुन पारवति, ओ वर त्रिभुवन देवा,
जगत ईशर सामि तोहि मिलु, कर जोरि करु सेवा ॥[1]

गीतार्थं श्रायवति ॥

महा, हे प्रिये ई हमरा साहजिके थी (क), वीनु निमिते क्रोध किए करै छी ॥

---

१. एहि गीतक प्रसंग, भाव आ कतोक पंक्तिसँ साम्य रखैत विद्यापतिक एक गीत लोक कंठमे अछि जकर संकलन कवीश्वर चन्दाझा कयने छलाह। गीत निम्नरूपक अछि—

जकर नगर एते पुर पाटन से कोना सूतै निचिन्त गे माई।
खेती न करथि भिखि न मांगथि बालक भोजन चाही गे माई ॥
नै घर अम्वर नै घर सम्वर नै धर पैंच उधार गे माइ।
एक दिना भुख सहलो न जाइक मासक मास उपास गे माई ॥
कोदो आनि पथार जे देलनि वाघक छाल ओछाय गे माई।
गौरी सोहागिनि जल लै गेली फूजल वसहा खाइ गे माई ॥
पाच मुखँ शिवशङ्कर जेमथि छौ मुख जेमनि बेटा गे माई।
सहस्रकला लय वासुकि जेमथि कैओ ने कहै भरि पेटा गे माई ॥
वासुकि जीवथि पवन पिवथि शङ्कर जहर खाय गे माई।
स्वामी हमर एहि विधि खेपथि हमर कोन उपाय गे माई ॥
भनहि विद्यापति सुनु ए मनाइन बड़ जानि सेवा कयल गे माई।
एतक सुख दुख एतहि खेपब ओतक कोन उपाय गे माई ॥

चन्दाझाक संग्रह, गीत—४२

॥ महादेवोक्ति गीतं ॥ गुण्ड ॥ प्र ॥

अवनत न कर रे धनि आनन चन्दा ,
लोचन जुगल रे मोर होअओ सान[1] | [2]न्दा ॥
न कर न कर रे धनि अपद रोसे ,
कहह मानिनि रे मोर किदहु दोसे ॥ ध्रुवं ॥
अधर कोमल रे नव पल्लव भासे ,
मलिन न कर रे खरतर निसासे ॥
विरह दहन रे दह देह कराला ,
देह हुतासन रे जनि मालति माला ॥
चतुरचतुरभुज रे भन निञो गेआने ,
सुन कलामति रे पिआ विना ए माने ॥ [3]

गौरी , हे प्रभु मोञो कत कहव ॥

॥ गौर्य्युक्ति गीतं ॥ राजविजय ॥ चो ॥

तपसिआ तोरे तपे केओ न भिखारी , पवलह राजकुमारी ॥ध्रुवं॥
तपसिआ मोरे मुख हेरि हसे , तोरा मुख कत रूप वसे ॥
जटाजूट फोट गोट चन्दा , जानि जानल धूरि फन्दा ॥

---

१. एहि ठाम पंक्तिक अन्तमे लम्बरेखामे तीन टा विन्दु देण खैक ।
२. य० पृ० सं०—२९ एवस—४क
३. रागभजन संग्रह (गीत-५) मे यैह गीत "मल्लाल' रागमे देल अछि । 'ध्रुव' शब्द नहि अछि । पाठान्तर नहि । यैह गीत द्रष्टव्य— चतुरचतुर्भुज एवं गीतसप्तदशी, गीत संख्या — १३

फूल तोरल मए आसे, सेओ भेल बसहक घासे ॥

विष्णुपु। [1] रीहेन भाने, ओहे जोगि जगत फिराबे ॥ [2]

[महा ॥ हे प्रिये सुनह ॥

---

१. य० पृ० सं०—३०; एक्स—४ ख

२. एक्स०—४ख पर एहि ठाम छूट चिह्न दऽ कऽ पत्रक उपरका भागमे लिखल अछि—महा, हे प्रिये [सुनह ॥ आसावरी ॥ चो ॥ ओहे दिन-दिन दिन होअ खीन ॥ गीतार्थं श्रावयति ॥ गौरी, इहाक वं लोक्य अधोन, किछु विज्ञप्ति मोरो ॥ ॥ कानरा ॥ पुरि ॥ द्विज जुवती हर'। एक्स०—१२ क पर पाँच पंक्तिमे एकटा गीत सम्पन्न कऽ छठम पङ्क्तिसँ '॥ आसावरी ॥ चो ॥' दऽ 'ओहे दिने [दिने होअ [खिने' सँ [एकटा गीत आरंभ होइछ जे एक्स०—१२ख पर छठम पंक्तिक मध्यमे संपन्न होइछ। एक्स०—१२ क पर रागोल्लेखक पश्चात् तथा प्रस्तुत गीतक आरम्भसँ पहिने छूट चिह्न दऽ पत्रक नीचाँ' मे छैक 'कि कनकलता अरविन्दा'। एक्स०—१२ख पर छठम पंक्तिमे ॥ कानरा ॥ प ॥ दऽ 'द्विजजुवती हर' सँ गीत आरम्भ होइछ। किन्तु एहि ठाम डेढ पंक्तिमे गीतक चारि चरण मात्र अछि। एहु गीतमे 'द्विज' शब्द पर छूट चिह्न दऽ कऽ अधोभागमे लिखल अछि 'निन्दति चन्दनमिन्दु किरणं ॥' य०पृ० सं०--३०; एक्स०—४ख पर संकेतित एवं एक्स०—१२ क-ख पर पल्लवित अंश कें य० पृ० सं०—३० में अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि।

[[¹आसावरो ॥ चो ॥

[कि कनक लता अरविन्दा²]

---

१. य० पृ० सं०-३०,-एक्स०-४ख मे अन्तर्भुक्त एक्स०-१२क केर अन्तिम दुइ पंक्ति।

२. ई पङ्क्ति कोनो स्वतन्त्र गीतक सङ्केत भगैत अछि। कारण आगाँ जे गीत अछि तकरा सङ्ग एकर सङ्गति बैसैत नहि अछि। संभव अछि एहि गीतक पूर्णरूप कोनो स्वतन्त्र पत्रमे देल गेल हो आ ओ पत्र वर्तमान हस्तलेखसँ विच्छिन्न भऽ कऽ हेरा गेल हो। रागतरङ्गिणी (पृ० ७६-७७) मे 'जोगिनी असावरी' रागक उदाहरणमे 'कविरत्तनाञ्ी' क एकटा गीत अछि जकर आरम्भ 'कनकलता अरविन्दा' सँ होइछ। एहि गीतमे नायिकाक रूपक बड़ विलक्षण वर्णन भेल अछि। वर्तमान प्रसङ्गमे महादेवो गौरीक रूपातिशयताक वर्णन कयलनि अछि। अतः 'कविरतनाञ्ी' क उल्लिखित गीत एहि ठामक हेतु पूर्ण उपयुक्त अछि। 'कविरतनाञ्ी' ओ 'कविरतन'केँ अभिन्न मानल जाइत छनि। कविरतनक अर्द्धनारीश्वर वर्णनात्मक गीत एहि नाटकमे पूर्वे प्रयुक्त भेल देखल गेल अछि। अतः नाटककार द्वारा कवि रतन (रतनाञ्ी) क दोसरो गीतक प्रयोग करबामे कोनो असङ्गति नहि लगैछ। कविरतनाञ्ीक ई चर्चित गीत निम्न रूपक अछि--

कनकलता अरविन्दा मदनाँ माँजरि उगि गेल चन्दा ॥
केओ बोल भमय भमरा केओ बोल नहि नहि चलय चकोरा ॥
केओ बोल सैबालैं बेढला केओ बोल नहि नहि मेघ मिलला ॥
संशए परु जन मही (केओ) बोल तोर मुख सम नहीं ॥
कवि रतनाञ्ा भानें सङ्क कलङ्क दुअओ असमाने ॥
मिलु रति मदन समाजा देवल देवि लखनचन्द राजा ॥

(आसावरि ॥ चो ॥ ?)

ओहे दिने दिने हा ञ खिने ‸ कबहु न गोअए कलङ्क मलिने ‸
पुर भेले गरसिअ तमे ‸ हरि न होअ तुअ आनन समे ॥
पुरह मनोरथ गोरी ‸ सर ॥
वनहि वस[1]ए अहनीसे ‸ तृण कर लोभे फिरए दह दीसे
ओहि नहि मनमथ वाणे ‸ हरि नहि तोहर नयन समाने ॥
एकहि करए ऋतु रावे ‸ मदन वेआधि सवहि मन तावे ‸
कि कहव तोहहि सआनी ‸ हरि तह नहि होअ तुअ सम वाणी ॥
दाव अनल ओहि दाहे ‸ नागर जन ओहि नहि अवगाहे ‸
करे न धरए ताहि कोई ‸ हरि नहि कामिनि कुच सम होई ॥
चान्द हरिण पिक गिरी ‸ तुअ तनु जीनल चारुहुक शिरी ‸
नृपजगजोतिमल भाने ‸ सवहिक शङ्कर कर समधाने ॥ [2]]

गीतार्थं श्रावयति ॥

गौरी ‸ इहाक त्रैलोक्य आधीन‸ किछु बिज्ञप्ति मोरो ॥[3]]

[[॥ [4]कानरा ॥ प ॥

(निन्दति चन्दनामिन्दु किरण ॥ [5]]
द्विज युवती हर ‸ गोपी कपटे धर ‸ अनेक जाति फुल भूले ‸ ‸
त्रिभुवन नाथ ‸ भूतगण साथ ‸ न हरि हरि हरि तुअ तुले ॥[6]]]

---

१. एक्स०—१२ ख केर सांढ़े पाँच पङ्क्ति ।
२. एकरा पश्चात् कोनो अङ्क दऽ दू पासी देल छैक ।
३. ई वाक्य एक्स--४ख केर ऊर्ध्वभागमे अछि जकर उल्लेख पूर्व भेल अछि ।
४. एक्स०--१२ ख केर डेढ़ पङ्क्ति ।
५. ई चरण अत उद्धृत गीतक थोक वा स्वतन्त्र गीतक प्रथम पङ्क्ति-सङ्केत ?
६. ई गीत एतबेटा अछि वा अपूर्ण से शङ्का कयल जा सकैछ ।

महा ॰ हे पार्व्वति [इहाक आनंदे][1] [एहिनी ठाँव] मोरा नृत्य करएक मन होइछ ॥

॥ महादेव नृत्यगीतं ॥ धनाश्री ॥ ए ॥

भौरी भरमे भमिए वम चन्दा ॰ वाघ जिविए रे वसह कर दन्दा ॥
कओने परि होएत नाट निरवाहे ॰ परम वेआकुल त्रिभुवन नाहे ॥
॥ध्रुवं ॥
शिरे सुरसरि भरे गेलि वढिआई ॰ नयन हुतासन परशे मिझाई ॥
ससरि खसल फणि दिशे दिशे घुरे ॰ तह्निके उपरे धस कातिक मजुरे ।
सुकविसदानन्द निते कर सेवा ॰ देथु अभय वर शंकर देवा ॥

गौरी ॰ हे ऋषीश्वर ॰ ईश्वरक नृत्य देखि ॰ हमराहु नाचएक मन[2] [(उत्साह)] होइछ ॥

ऋषि ॰ हे पार्व्वति ॰ ञोहाञो ईश्वरक अ | [3]र्द्ध शरीरक उचित ॥

॥ गौर्य्युक्त गीतं ॥ मेघमल्लाल ॥ प्र ॥

गान मृदङ्ग ॰ तान ताल रव ॰ वृंद उघट ताहा देई ॰
ईसर संजुत ॰ मण्डल नाचत ॰ किंनरि इ सुख लेई ॥
घेडि डिं तकडि डिं ॰ देठि डिं तकडि डिं ॰ टकनकता ॥
हर नाचए २ तत्त थेइ २ तत्त थेइ ॥ ध्रु ॥
नाद सरूप जान एक ईसर ॰ सुखि जन सुखक निवास ॰
दुखि जन दुख हर देअ परमपद ॰ सव मन हो परगास ॥

१॰ एहि ठाम ($\overset{\vee}{\wedge}$) एहन छूट चिह्न देल छैक आ तकरो बीचमे छूट चिह्न देल छैक । एक्स०--४ख केर ऊर्ध्व भागमे पूर्वोद्धृत छूटल पङ्क्ति सँ ऊपर लिखल छैक 'इहाक आनन्दे' तथा छूट चिह्न वाला पङ्क्तिक सोझे पत्रक दहिन भागमे तिरछा कऽ सूक्ष्म अक्षरमे लिखल छैक 'एहिनीठाँव'

२. 'नाचएक मन' एहि दू शब्दकें ऊपरमें दुनु कातसँ लम्बरेखासँ घेरि ओही सोझा पत्रक अधोभागमें वैकल्पिक पाठ 'उत्साह, देल अछि ।

३. य० पृ० सं० -- ३१; एक्स० -- ५क

थेटक ॥

[न कथे एता, ता: टकनक ताता, ताधं गादे धं गाथेइता ॥

हरना ॥

एहि असार संसार सार एक शिव पद पंकज जोर,
महिपिति जगजोति भनए भगति निति एहि जनु केओ होअ भोर ॥

घेडिंडि फनि घेघेनां, टघेडिंडि फनि टघेनां
टघेनां दघेनां घे गर्घे दांति[1]॥]

महा, हे प्रिये साधु साधु, हमरा परिश्रम बड़ भेल, अतप्पर खन एक जुआ खेलाहु ॥

गौरी, ईश्वर सर्व्वथा ॥

॥ मालव ॥ धए ॥

शशधर डमरु वसह वघछाला, गाँग पिणाक वलए जपमाला ॥
जत जत कैतवे आडल आनी, सवहि वे [2]रि सवे जिनल भवानी ॥

॥ ध्रुवं ॥

आडल सरबस सवे देल झारी, पुनु [पुनु] जोहिअ छूछि अधारी[3]॥
आध शरीर हरल हरे हारी, सेहओ जिनल गिरिराज कुमारी ॥
तखन लजाए रहल शिरनाई, हर आलिंगल हरषि मनाई ॥
जुगुत जुआरी गोविन्द भासा, गोरि सहित हर पुरवथु आसा ॥

महादेवष्कोपं कृत्वा, तत्रैव कोणान्तरे तिष्ठति ॥

ऋषि, हे पार्व्वती महादेव मनोदुष्खे वैसल छथि गए मनावह ॥

गौरी, हे ऋषीश्वर सुनु ॥

---

१. एहि गीतक मृदङ्गक बोलवला अंश ढबकल आ लेपायल सन रहने पढ़बामे अत्यन्त कष्टकर अछि।

२. ग० पृ० सं०—३२; एक्स०—५क

३ 'छूछिअ धारी' एहनो पदच्छेद सम्भव अछि।

॥ गौर्य्युक्ति गीत ॥ श्रामेव ॥ जति ॥

भमि भमि पुछे गोरि देह उपदेशे , माइहे ,

कि देव अनाउव रुसर महेशे ॥

खाट तुरैया सेज हुनि न सोहावए , जतहु कतहु बाघ छाल ओछावए ॥

क्षीर क।[1]पुर पान हुनि न सोहावे, आक धुतुर फुल तह्नि भल भावे ॥

विष्णुपुरी कहे , हित उपदेशे , हाथ काँकँण वाँध वूढ महेशे ॥

॥ गीतार्थं श्रावयति ॥

ऋषि , हे पार्वती , शिवक चरित्र बुझैते कठिन थी (क) , मोञो कहै छञो , अवधान कर ॥

ऋष्युक्ति गीतं ॥ मालव ॥चो॥

जारि कुसुम धनु , भसमे धवल तनु , अनुखन भोजन भागे ,

शिर गाँगे लो ॥

कञोने गुणे हिमगिरि[2] राजकुमारी , तुव नारी लो ॥ ध्रुवं ॥

सहज दिगम्वर , वूढ वसहं घर , भूषण घाघेरि छाला ,

रुडमाला लो ॥

भूत सेवक साथे , खटंग डमरु हाथे , सबे खण सुतथि मशाने ,

विषपाने लो ॥

जगदिश बोल सुन , गोरिक वड पुन , देवहुक देव जटेशा ,

पुर आशा लो ॥

गीतार्थं श्राव।[3]यति ॥

अपन एहन रूप , आनका महादेवहिक प्रसादे सवे सिद्धि ॥

गौरी , हे ऋषीश्वर ञोहाञो किछु ईश्वरक आदि मूल जनै छी ॥

---

१. य० पृ० सं०—३३; एक्स०—६क

२. एहि ठाम (v v v) एहि प्रकारक चिह्न छैक ।

३. य० पृ० सं०—३४; एक्स०—६ख

गौर्य्युक्ति गीत ।। गौडामालव ।। प्र ।।

बांधि विकट जटा, तथिहु चाँदेरी फोटा ।।
कत जुग सहस वयस वहि गेला,
उमत महादेव समत न भेला ।।
मौलि मेलए छार, सहज न तेज पार ।।
नाम वामदेओ, हठे न हटअ केओ ।।
कवि विद्यापति गाऊ, जीअओ शिवसिंह राऊ ।।[१] ।।

[ऋषि, से इहे पए जानिञो, त्वराए ईश्वर मनाञो आनु ।।
गौरी, मञो जाइ छञो] ।।

तत्तो गौरी ईश्वरं हस्ते गृहीत्वा स्थानमानयति ।।

गौरी, हे ईश्वर हम सञो किए रुसं छी, हम नेहर पठैअहु ।।

।। महादेवोक्ति गीत ।। पहडिआ ।। घए ।।

रुसलि भवानी न मानए बोध, आजे क्षमह गोरि मोरे अनुरो(?) ।[२]घ ।।
जत किछु मग तोह अछए भण्डार, पहिलहि देव गिम फणि मणिआर ।।
[३]भुखलहुँ भाँग देअओ विषे सानि, चढअक वसहा देवउ पलानि ।।
भनइ विद्यापति पुनु पुनु सेव, चंदलदेविपति वैद्यनाथ देव ।।

ऋषि, हे महादेव, मोर विज्ञप्ति सुनु ।।

।। ऋष्युक्ति गीतं ।। मालव ।। खर्ज ।।

हर हे सेवए अएलहु सुख लागी, विषम नयन अनुखन वर आगी ।।
वसह पराएल आगे, पैसि पताल रहल गए नागे ।।
शशि उठि चलल अकाशे, गोरि चलल गिरिराजक पाशे ।।

---

१. रागतरङ्गिणी (पृ०-१०७) मे गौडामालवक गौडीय प्रभेदक उदाहरण मे ई गीत देल गेल अछि। पठान्तर—बाँधए। तथिहुँ चदिन। तेजए। चारिम पङ्क्तिक अभाव। सुकवि। जिवओ। शिवसिंह।

२. य० पृ० सं०—३५; एक्स०—७क

१. एहि ठाम 'भुखलह' शब्द लीखि ऊपरमे चारू अक्षर पर दू-दू टा लम्बरेखा देल अछि जे चारू अक्षरकेँ काटि देबाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि।

उचित कहए नहि जाई, उमत अराधव कओने उपाई ॥
विद्यापति कवि सेवा, देथु अभय वर शंकर देवा ॥[1]

ऋषि, हे पार्व्वती, तोहे ईश्व।[2] एक अर्द्धशरीर, तह्नि सञो कोप नहि उचित, ॥

गौरी, हे ऋषीश्वर एवमेव, ॥

गौरी, उत्थाय महादेव समीपं गत्वा प्रणम्य ॥
मोरा किछु संशय भेलछ, ते गोचर करै छओ, अवधान करू ॥

॥ गौरी महादेवयोर्द्दण्डक गीतं ॥ सिन्दुरा ॥ प्र ॥

भसम रूख होअ तुअ मुख सूनिअ, मश्रृण होअ तुअ तनू, हरहे,
नील रतन सम सामर सुन्दर, जारल कुसुम धनू, गोरि हे ॥
भुजग भुषण तुअ दूषण सवे देअ, किए धएल दिनमणि भासे, हरहे,
विमल कमल सम तुअ मुख मण्डल, दरसन होओ ते •आसे, गोरिहे ॥
अनल चांद रवि विषम विलोचन, ई किए अदवुद रूपे, हरहे,
पिवए लागि धएब तीनि विलोच।[3] न, तुअ रुप अमिअ सरूपे, गोरिहे॥

१. ई गीत मिथिलाक कोनो प्राचीन स्रोत सँ नगेन्द्रनाथ गुप्त सेहो प्राप्त कयने छलाह आ हरगौरीपदावली (गीत—३०) शीर्षकमे प्रकाशित करौलनि। मित्र—मजुमदार (गीत—७९६) मिथिला मे लोकमुख सँ संगृहीत 'हरगौरी और गङ्गा विषयक पद' शीर्षकमे रखलनि। पाठान्तर—शिव हे। अयलाहुँ। विषम। अनुखने। वसहा पड़ाएल। नुकायल नागे। सास। अकासे। चललि। पासे। बोलए नहि जाई। उमत बुझाओब कओने उपाइ। भनइ विद्यापति दासे। गौरी संकर पुरावथु आसे।

२. य० पृ० सं०—३६; एक्स—७ख

३. य० पृ० सं०—३७; एक्स०—८क

भूत वेताल ताल रवे नाचिअ , याचिअ घरे घरे भीखि , हरहे ,
आन केओ जनु हमर सरुप बुझ , तोहे एक बुझह विशेषी, गोरिहे ॥
नृपजगजोति कह काहि न सोहए , गिरिजा गिरिश विलासे , हरहे ,
प्रणमि प्रणमि ओहे पुनुपुनु विनवए , दुर कर कलुष तरासे ॥[1]
[महा , हे प्राण प्रिये, मोहु[2] किछु कहै छी ॥]

[[॥ [3]सिं ॥ प्र ॥

गिरिवर नन्दिनि हर हिअ हारिणि , मधुमय रूप अनूपे ।
तिनिहु विलोचने सब दुख मोचन , के जान तोहर सरूपे ॥
तुअ मुख शशधर सब दिन रह पुर , मोर सिर वह नव चन्दा ,
सकल कलामय गुणगण आलय , तोह तह होअ अनन्दा ॥

---

१. गीतक अन्तसे छूट चिह्न दऽ कऽ पत्रक ऊपरमे लिखल अछि ,
'महा , हे प्राण प्रिये , मोहु किछु कहै छि ॥ ॥ विभास ॥ चो ॥
गिरिवर नन्दिनि ,। अभिसारिणि हे मा ॥'
एक्स०—११ख पर एकटा सम्पूर्ण गीत अछि जे 'गिरिवरनन्दिनि हर हिअ हारिणि' सँ प्रारम्भ होइत अछि । ओ गीत वर्त्तमान स्थलक थीक किन्तु प्रतिलिपि कालमे छूटि जयबाक कारण स्वतन्त्र पत्रमे लिखल गेल अछि । 'अभिसारिणि हे' सँ आरम्भ होमऽ वला गीत उपलब्ध पत्रमे कतहु नहि भेटैछ ।

२. मोराहु' लीखि 'रा' पर तीन गोट लम्बरेखा दऽ ओकरा कटबाक संकेत अछि ।

३. एक्स०—११ख पर 'एक' अंक सन एक विशेष प्रकारक चिह्न दऽ कऽ गीत आरम्भ भेल अछि । ओ समस्त गीत य० पृ० सं०—३७; एक्स०—८क मे अन्तर्भुक्त कऽ देल गेल अछि । एक्स०—८क पर छूट संकेतमे राग ॥ विभास ॥ देल अछि किन्तु एतऽ ॥ सिं ॥ अछि जे राग सिन्धुरा वा सिन्दुराक संकेत थीक । रागमे ई अन्तर किएक ?

तोहे वर नागरि सब तह आगरि ˎ तोहे छाड़ि के मोरा आने ˎ
जनमे जनमे हमे अनेक तपस कए ˎ पओलाह तोहहि किसाने ॥
तोहर पिरिति गुणि सुनह सुलोचनि ˎ वाटि देल तनु आधे ˎ
तोहर चरित सवे कहि न होअ आवे ˎ पुरल मनोरथ साधे ॥
सवहि जुगुति मति हरक चरण गति ˎ महिपति जगजोति भाने ˎ
दुर कएल भवनेह मोहि शरण देह ˎ तोह तेजि गति नहि आने ॥ |]]

ऋषि ˎ हे ईश्वर ˎ ओहा दुहु व्यक्तिक सामरस्य देखि हमरा बड आनन्द भेलछ ˎ अतष्पर शान्ति रस गवै छी ।

॥ गौरी ऋष्युक्ति गीतं ॥ आसावरी ॥ चो ॥
कैसे सतरव भवतीरे ˎ परलहु नीर गँभीरे ॥
हे शिव शिव ˎ सर ॥
शरण कएल तुअ जानी ˎ राखह ईश भवानी ॥
करम धरम तप हीना ˎ भेलहु |[1]पाप अधीना ॥
तोहे त्रिभुवन पति नाथे ˎ हम निरदीस अनाथे ॥
करण महेश कह एके ˎ अवे सव तोहर विवेके ॥[2]

ऋषि ˎ हे सन्त जन ˎ नाटक नाना प्रकार नचै छओ ˎ ताहो श्रीश्री जगज्ज्योतिर्म्मल्ल महाराजक अनुमत दुइ श्लोक कहै छओ ॥

१. य० पु० सं०—३८; एक्स०- -८ख

२. एहि गीतक भाव तथा दुइ गोट पंक्ति विद्यापतिक नाम पर चलैत गीतमे भेटैत अछि । सम्भव अछि जे करण महेशेक प्रस्तुत गीतकें तोड़ि-मोड़ि कऽ विद्यापतिक नाम पर चला देल गेल हो । गीत निम्न रूपक अछि—

तोंह प्रभु त्रिभुवन नाथे । हे हर हम निरदीस अनाथे ॥
करम धरम तप हीने । पड़लहुँ पाप अधीने ॥
वेड़ भासल माझ धारे । भैरव धरु करुआरे ॥
सागर सम दुख भारे । अबहु करिअ प्रतिकारे ॥
भनहि विद्यापति भाने । संकट करिअ तराने ॥
—नगेन्द्रनाथ गुप्त (हरगौरी पदावली, गीत—४२), मि० म०, गीत-७७५

श्लोकः ॥

नेत्राह्लादकरन्तु किञ्चिदपरं श्रोत्रप्रसादार्प्पकं
चित्ते सन्तनुते प्रमोदमितरन्त्वन्यद्विषादापहं ॥
नारीप्रीतिकरं कियच्च तरुणस्यैकं शिशोष्प्रीतिदं
पूर्ण्णं नन्दरसैर्व्वदन्ति विवुधास्त्वेवं विधं नाटकं ॥
द्रव्यं केचन साधयन्त्यनुदिनं धर्म्मं परे त्वीप्सितं
मोक्षं केपि च नाट्यनीतिविधिना नानाविधं कामितं ॥
एवं सर्व्वमनर्थकन्तु मनुते भूमीपति श्रीजग |[1] ज्ज्यो–
तिर्म्मल्लशिवांघ्रिपद्ममधुपो हीष्टार्प्पणं सार्थकं ॥

॥ गीतमपरञ्च ॥ केदारा ॥ खर्ज ॥

अओर राह निरवाह नाही शरण राखह ईश
चाँद चन्दन विभुति भूषण भाँग भोअण वीस ॥
कान कुण्डल करहि कङ्कण वलय हार फणीस
भूत सङ्ग मसान मन्दिर केलि कर अहनीस ॥
हाडमाल जटा विराजित सवह्नि देव अधीस
अगम रूप सरूपे शङ्कर अओर कओन सरीस ॥
परिहास त्रास उदास मानस भओ हञो निरदीस
नृपतिजगजोति गाव निजमति चरण वन्दओ सीस ॥[2]

॥ सर्व्वे उत्थाय श्लोकं पठन्ति ॥

तदेकभक्तिभावनावशाच्चकार नाटकं
य एतदुत्तमं लसत्तमं तदस्य भूपतेः ।
अ |[3] शेष देव दैवतं समस्त लोक सेवितः
शिवः शिवानि मङ्गला तनोतु मङ्गलानि सा ॥

---

१. य० पृ० सं०—३९; एक्स०—९क

२. गीत-संग्रह, गीत—२३ । पाठान्तर—सरण । भोअन । सबहि । सरूप । कञोन । भयो । निरदीश ।

३. य० पृ० सं०—४०; एक्स०—९ख

॥ ततष्कारण गीतं ॥ मालव ॥ झु ॥

सात उपर शत सातहि गुनू, समत नेपाल एहि विधि जानू ॥
जेठ कुहु तिथि सुरुज गरास, तुलादान मख कएल उलास ॥
कत उपचार मंगल धुनि बाज, भगत नगर वहु सुजन समाज ॥
नृपजगजोति देखि भव भीति, करम कएल जत चण्डि पिरीति ॥
सुकवि वंशमणि मंगल गाऊ, नृपजगजोतिमल्ल होथु चिराऊ ॥[1]

॥ हे वृन्द अतष्परं श्री पशुपतिका स्तुति किछु करै छओ ॥

प्रथम प्रणमओ देव गणपति अओ षडानन संजुतं ॥
भाल वाल विशाल शशधर, लो[2] चन त्रय शोभितं ॥
असुर किन्नर नाग नर वर, सकल सेवित त्र्यम्बकं ॥
वास विहित समाधि सङ्गत, जोगि जन मणिपूरकं ॥
कम्बु कुन्द समान तनु रुचि, विजित फाटिक[3] पर्व्वतं ॥
त्रिपुर हर मति दुष्ट दानव, दर्प्प खण्डन गर्व्वितं ॥
शिर मंदाकिनि हाड किङ्किणि, व्याल हार विराजितं ॥
सनकादि मुनिवर वृन्द वन्दित, वासवादि सभाजितं ॥
विषय मोह ममत्व परिहरि, नित्य वसथि मसान ॥
देथि रङ्कहि राअ पदवी, एहन के प्रभु आन ॥
कर वराभय डमरु शूलहि, शिवक रूप अनूपमं ॥
अद्ध अङ्गहि अङ्गना धरि, तिनिहु भुवन अनुत्तमं ॥
हर पाद पङ्कज निहित मानस, नृपतिजगजोति भाषितं ॥
भाव [4]यत्वघराशि दारक, मृद्धि सिद्धि मनारतं ॥

---

१. रागभजनसंग्रह, गीत—३९ । पाठान्तर—सातसात वसुजुगलकपाव, समत नेपाल द्विजवरहि मिलाव । कुहू । मखे । जगजोतिमल ।

२. य० पृ० सं०—४१; एक्स०—१०क

३. एहि ठाम लम्ब रूपमे तीन विन्दु देल छैक ।

४. य० पृ० सं०—४२; एक्स०—१०ख

[।। सर्व्वे उत्थाय कुराग प्रायश्चित्त गीतं गायन्ति ।।

हे वृन्द, नृत्य राग वेला नियम नही, से कुरागओ गाबिअ, से ताहि पापक प्रायश्चित्तार्थ भैरवी रागे, हरिहर स्वरूप गबै छी ।।

भैरवी ।। चो ।।

गगन गगन[1]]

---

[1]. ई गीत वर्त्तमान हस्तलेखक कोनो अतिरिक्त पत्रमे कतहु उपलब्ध नहि अछि । किन्तु थिक ई वंशमणि कविक हरिहर–स्वरूप-वर्णनात्मक गीतक आरम्भिक अंश । एहि गीतक पूर्ण रूप नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालय मे रक्षित 'राग-भजन–संग्रह' (गीत—१० नामक हस्तलिखित ग्रन्थमे भेटैछ । ओहिठाम सेहो ई गीत भैरवी रागहिमे देल गेल अछि । अन्तिम डेढ़ पंक्ति खण्डित छैक । भणितामे कवि ओ हुनक पोषकक नाम बचल अछि । किन्तु नाना राग (क्रमांक-प्रथम ३३८) गीत—३९ मे ई गीत पूर्ण अछि । गीत निम्नरूपक अछि—

।। भैरवी ।। प्र ।।

गगन गगन सम, जलधि जलधि सम, ताहि उपमा नहि आने,
जे हर से हरि, जे हरि से हर, एक ओहे रहथि निदाने ।।
एक कर तिरशूल, एक कर सारँग, एक कर डमरु बजावे,
एक कर पङ्कज, धरिए एक भए, दुइ तनु लोक देखावे ।।
दहिने वर दिअ, वामे अभय दिअ, दुहु ओहे मङ्गल रूपे,
ओ कमलापति ओ गिरिजापति, के बुझ हुनक सरूपे ।।
शिव शिव दायक, हरि शुभदायक, एहे दुहु एक पराणे,
मोह मगन जन, संकट जत होअ, ओहे ताहि करथि तराणे ।।
सुकवि वंशमणि, नृप जगजोति दुहु, हरि शङ्कर गुण गाई,
कुराग गान अवस, ओअ पातक, भैरवि तह दुर जाई ।।

॥ हे वृन्द ‚ तदनन्तरं कहरा गाओव ‚ ॥

कहरा ॥ सारङ्गी ॥ चो ॥

वदन धन्य मोर हर गुण कहिए ‚ श्रवण धन्य सेहे सुनिए रे ॥
कर जुग धन्य कैए तसु अभिनय ‚ नयन धन्य सेहे देखिए रे ॥

चरण धन्य हर भगति करिए जे ‚ दुरित दुष्ख दुर जैहञो रे ॥
जोग जतने जाहि जोगि न पावए ‚ तह्नि आवे अचिरेहि पैहञो रे ॥
पतङ्ग न चीह्नि पावक जनि परिहुए‚ तैसन विषयरस वझिहुए रे ॥
शमन पराभव देखि देखि जडमति ‚ पाछे पुनु पँचतैहुए रे ॥
भगति भाव महिमा के जानए ‚ जे नहि एहि सोहावए रे ।
चकोर चाँद जनि अविरल सेवए ‚ नृपजगजो[1] तिमल गावएरे ॥

[नृपतिः परिपातु पूर्ण्णकामः ‚ पृथिवीं, सन्तु निरामयाश्च लोकाः ॥
अथ वर्षतु वासवः स्वकाले ‚ परमानन्दमयोयमस्तु देशः ॥]

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज श्रीश्रीजगज्जोतिर्म्मल्ल कृतं
पंचपंचाशद् गीतोपवद्धं हरगौरीविवाह नाम नाटकं समाप्तं ॥

श्रीभवानी शंकरौ प्रीणीतः ॥

॥ सम्वत् ७४९ ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्या सूर्य्यग्रासस ‚
श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्म्मल्लदेवप्रभु ठाकुर सन तुलादानस ‚
थ्व हरगौरी विवाह प्याखन दयका जुरों ॥

॥ शुभानि भवन्तु ॥

---

१. य० पृ० सं० — ४३; एक्स० — ११क